04- विमर्शों के बीच एक नया विमर्श

05- बार्बिजाँ कलाकारों में थियोदोर रूसो और शार्ल दोबिन्यी

A Daily News Magazine

इंदौर

रविवार, 22 दिसंबर, 2024

06- प्रशासन का ध्यान नहीं देना उसकी मौन स्वीकृति..?

07- मेरा नाम राजू घराना अनाम

इंदौर एवं भोपाल से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 10 अंक 84, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

(डाक पंजीयन संख्याः MP/IDC/1529/2016-2018)

सुबह सवेरे

subahsaverenews@gmailÐcom

facebookÐcom/subahsaverenews

wwwÐsubahsavereÐnews

twitterÐcom/subahsaverenews

आत्मिक शांति ...

यह गोम्पा है जिसे मठ भी कहा जाता है। हिमाचल प्रदेश की लाहौल स्पीति जिले में काजा से 13 किलोमीटर दूर इस मठ की स्थापना 13वीं शताब्दी में हुई थी। यह स्पीति क्षेत्र का सबसे बड़ा मठ है।

फोटो : गिरीश शर्मा

सुप्रभात

बुरी बात है
चुप मसान में बैठे-बैठे
दु:ख सोचना, दर्द सोचना।

शक्तिहीन कमज़ोर तुच्छ को
हाज़िर नाज़िर रखकर
सपने बुरे देखना।
टूटी हुई बीन को लिपटाकर छाती से
राग उदासी के अलापना।

बुरी बात है।
उठो, पांव रक्खो रकाब पर
जंगल-जंगल नद्दी-नाले कूद-फांद कर
धरती रौंदो!
जैसे भादों की रातों में बिजली कौंधे,
ऐसे कौंधो।

– भवानी प्रसाद मिश्र

कुवैत पहुंचे पीएम मोदी कथकली डांस से स्वागत

भारतीय पीएम को कुवैत आने में 4 दशक लगे-मोदी

प्रवासी भारतीयों से कहा- मैं आपसे मिलने ही नहीं, आपकी उपलब्धियों को सेलिब्रेट करने आया हूं

● आग में जान गंवाने वाले मजदूरों के कैंप भी जाएंगे पीएम

कुवैत सिटि (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी शनिवार को दो दिवसीय दौरे पर कुवैत पहुंचे। 43 साल बाद ये किसी भारतीय पीएम का पहला कुवैत दौरा है। पीएम मोदी से पहले 1981 में प्रधानमंत्री रहते इंदिरा गांधी ने कुवैत का दौरा किया था। मोदी का एयरपोर्ट पर रेड कार्पेट वेलकम हुआ।

प्रवासी भारतीयों को संबोधित करते हुए मोदी ने कहा कि 43 साल के बाद भारत का कोई पीएम कुवैत आया है। आपको भारत से आना है तो 4 घंटे लगते हैं, प्रधानमंत्री को 4 दशक लग गए। मोदी ने कहा कि कुवैत में लोगों को हर त्योहार मनाने की सुविधा है। लेकिन मैं आपको सेलिब्रेट करने आया हूं। इससे पहले भारतीय मूल के लोगों ने प्रधानमंत्री मोदी के लिए कथकली डांस परफॉर्म किया था। इसके बाद पीएम कुवैत सिटी पहुंचे। जहां अरबी भाषा में लिखी और प्रकाशित रामायण और महाभारत पुस्तक के प्रकाशक अब्दुल लतीफ अलनेसेफ और अनुवादक अब्दुल्ला बैरन से मुलाकात की। उन्होंने पीएम मोदी को अरबी भाषा में लिखी महाभारत और रामायण उपहार में भेंट की। इसके बाद मोदी ने कुवैत के स्पिक लेबर कैंप का दौरा किया और भारतीय मजदूरों से मुलाकात की। दरअसल, इसी साल 12 जून को कुवैत में मजदूरों के एक कैंप में आग लग गई थी, जिसमें 50 लोगों की जलकर मौत हो गई थी। इनमें 45 भारतीय थे।

कुवैत के जरिए गल्फ देशों को साधने की तैयारी

विदेश मंत्रालय ने पीएम के कुवैत दौरे को गल्फ देशों से संबंध अच्छे करने में अहम कदम बताया है। मंत्रालय ने कहा- भारत और कुवैत के बीच पारंपरिक रूप से गहरे संबंध हैं, जिनकी जड़ें इतिहास में हैं। यह लोगों के बीच मजबूत संबंधों पर आधारित हैं। भारत कुवैत के शीर्ष व्यापारिक साझेदारों में से एक है। इससे भारत-कुवैत के बीच बहुआयामी संबंधों को और मजबूती मिलेगी। खाड़ी सहयोग परिषद (जीसीसी) की अध्यक्षता कुवैत कर रहा है। इसमें संयुक्त अरब अमीरात, बहरीन, सऊदी अरब, ओमान और कतर भी शामिल हैं। कुवैत इकलौता ऐसा खाड़ी देश है जहां मोदी प्रधानमंत्री बनने के बाद से अब तक एक बार भी नहीं गए थे।

दान पेटी में गिरा आईफोन, मंदिर ने बताया अपनी संपत्ति

चेन्नई (एजेंसी)। तमिल फिल्म 'पालयथम्मन' में एक महिला गलती से अपने बच्चे को मंदिर की 'हुंडी' (दान पेटी) में गिरा देती है और बच्चा 'मंदिर की संपत्ति' बन जाता है। ऐसी ही घटना चेन्नई के पास थिरुपुरुर के अरुलमिगु कंदस्वामी मंदिर में हुई है।

दरअसल, विनयागपुरम के रहने वाले एक भक्त दिनेश का आईफोन गलती से मंदिर की दान पेटी में गिर गया। आईफोन वापस मांगने के लिए उन्होंने मंदिर प्रशासन से संपर्क किया। हालांकि, उन्हें खाली हाथ लौटना पड़ा। मंदिर के अधिकारियों ने दिनेश से कहा कि हुंडी में मिली कोई भी चीज भगवान की होती है।

मुंबई नाव हादसा

अपने बच्चों को समुद्र में फेंकना चाहते थे पैरेंट्स

● ताकि डूबने से पहले रेस्क्यू टीम उन्हें बचा ले

● सीआईएसएफ कॉन्स्टेबल ने कर दिया खुलासा

मुंबई (एजेंसी)। मुंबई में 18 दिसंबर को हुए नाव हादसे में मौत का आंकड़ा 15 पहुंच गया। हादसे के चौथे दिन शनिवार को 7 साल के बच्चे का शव मिला। सर्च और रेस्क्यू ऑपरेशन खत्म हो गया है। गेटवे ऑफ इंडिया से एलीफेंटा जा रही पैसेंजर बोट और नेवी की स्पीड बोट टकराकर डूब गई थी। दोनों में कुल 113 लोग सवार थे, जिसमें 98 को बचाया गया था। रेस्क्यू टीम में शामिल एक कॉन्स्टेबल ने शनिवार को बताया कि बोट में सवार कुछ पैरेंट्स अपने बच्चों को समुद्र में फेंकना चाहते थे। उन्हें लग रहा था कि बोट डूब रही है, पानी में फेंकने से बच्चे शायद बच जाएं। उन्हें लग रहा था कि बच्चों को बचाने के लिए मदद जल्दी पहुंच जाएगी। वहीं, एक कार्गो शिप के ड्राइवर ने बताया- मेरी बोट की कैपेसिटी 12 लोगों की थी, लेकिन मैंने अपने अनुभव पर भरोसा करते हुए 56 लोगों को बोट में चढ़ाया और उन्हें किनारे तक पहुंचाया। यह बहुत बड़ा एक्सीडेंट था। महिलाएं-बच्चे चिल्ला रहे थे। सभी बोट में चढ़ना चाहते थे। इन 56 लोगों में एक बच्चा बच नहीं सका।

मप्र सरकार देगी सम्राट विक्रमादित्य राष्ट्रीय सम्मान

11 लाख होगी राष्ट्रीय सम्मान राशि

भोपाल। मध्यप्रदेश सरकार द्वारा सम्राट विक्रमादित्य के बहुविध गुणों न्याय, दानशीलता, वीरता, सुशासन, खगोल एवं ज्योतिष विज्ञान, कला, शौर्य, प्राच्य वांग्मय, राजनय, आध्यात्मिक क्षेत्र, रचनात्मक एवं जनकल्याणकारी कार्य के क्षेत्र में श्रेष्ठतम उपलब्धियों एवं उल्लेखनीय योगदान के लिए सम्राट विक्रमादित्य राष्ट्रीय सम्मान दिया जायेगा। जिसकी सम्मान राशि 11 लाख रूपये होगी, प्रशस्ति पत्र एवं सम्मान पट्टिका भी प्रदान की जायेगी। इसके अलावा तीन श्रेणियों में सम्राट विक्रमादित्य शिखर सम्मान भी दिया जायेगा। जिसमें प्रत्येक व्यक्ति या संस्था को 2 लाख रूपये सम्मान राशि, प्रशस्ति पत्र एवं सम्मान पट्टिका प्रदान की जायेगी। उल्लेखनीय है कि यह अलंकरण मध्यप्रदेश शासन, संस्कृति विभाग अंतर्गत महाराजा विक्रमादित्य शोधपीठ द्वारा स्थापित किया गया है।

महाराजा विक्रमादित्य शोधपीठ के निदेशक श्रीराम तिवारी ने बताया कि उज्जयिनी के सार्वभौम सम्राट विक्रमादित्य भारतीय अस्मिता के उज्जवल प्रतीक हैं। वे शकारि तथा साहसांक हैं। वे शक विजेता, सम्वत् प्रवर्तक, वीर, दानी, न्यायप्रिय, प्रजावत्सल, स्तत्व सम्पन्न थे। वे साहित्य, संस्कृति और विज्ञान के उत्प्रेरक रहे। सम्राट विक्रमादित्य ने विदेशी शकों को पराजित कर विक्रम संवत् आरंभ किया। भारतीय काल गणना को विश्व में प्रतिष्ठित किया। विक्रमादित्य और विक्रम संवत् की जैसी लोकख्याति और लोकमान्यता है वैसी किसी दूसरे राजा की या सम्वत् की नहीं है।

शोधपीठ के निदेशक ने बताया कि यह सम्मान सम्राट विक्रमादित्य के बहुविध गुणों न्याय, दानशीलता, वीरता, सुशासन, खगोल एवं ज्योतिष विज्ञान, कला, शौर्य, प्राच्य वांग्मय, राजनय, आध्यात्मिक क्षेत्र, रचनात्मक एवं जनकल्याणकारी कार्य के क्षेत्र में कार्य करने वाले विभिन्न व्यक्तियों, संस्थाओं, समाजशास्त्रियों, बुद्धिजीवियों, लेखकों, समीक्षकों, पत्रकारों से सम्मान हेतु अनुशंसा/नामांकन की प्रविष्टियाँ आमंत्रित की जायेगी। सम्मान का चयन प्रतिवर्ष उच्च स्तरीय निर्णायक समिति के माध्यम से किया जायेगा।

चयन समिति में देश-प्रदेश के प्रतिष्ठित समाजसेवी, बुद्धिजीवियों, समाजशास्त्रियों, लेखकों, पत्रकारों एवं विशेषज्ञों को शामिल किया जायेगा।

खेल क्षेत्र में रतलाम बना रहा है विशिष्ट पहचान : मुख्यमंत्री

आजादी के बाद प्रदेश में पहली बार खेल बजट में हुआ 586 करोड़ रूपये का प्रावधान

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि आजादी के बाद पहली बार हमने प्रदेश में खेलों के लिए 586 करोड़ रूपये के बड़े बजट का प्रावधान किया है। मध्यप्रदेश एकमात्र ऐसा राज्य है, जहाँ हॉकी के लिए सर्वाधिक एस्ट्रोटर्फ होंगे। खेलों को अब पाठ्यक्रम का भी हिस्सा बनाया गया है। खेल शिक्षक भी असिस्टेंट प्रोफेसर, प्रोफेसर और कुलगुरु बन सकते हैं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव शनिवार को रतलाम में चैतन्य काश्यप फाउंडेशन द्वारा आयोजित किये जा रहे खेल चेतना मेले के रजत जयंती समारोह का शुभारंभ कर संबोधित कर रहे थे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने ध्वजारोहण कर खेल चेतना मेले के शुभारंभ की घोषणा की। कार्यक्रम में सूक्ष्म, लघु, मध्यम उद्यम मंत्री श्री चैतन्य काश्यप, सांसद श्री सुधीर गुप्ता, सांसद श्रीमती अनीता नागर सिंह चौहान, जिला पंचायत अध्यक्ष श्रीमती लालाबाई शंभू लाल चंद्रवंशी, विधायक आलोट श्री चिंतामणि मालवीय, विधायक रतलाम ग्रामीण श्री मथुरा लाल डामोर, महापौर श्री प्रहलाद पटेल, श्री प्रदीप उपाध्याय, नगर निगम अध्यक्ष श्रीमती मनीषा शर्मा, सहित कई जनप्रतिनिधि उपस्थित थे।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने रतलाम में हॉकी के लिए एस्ट्रो टर्फ निर्माण, व्यवसाय को गति देने के लिए साड़ी क्लस्टर निर्माण की घोषणा की। उन्होंने कहा कि साड़ी क्लस्टर में महेश्वर, चंदेरी

की तर्ज पर शहर में महिलाओं को साड़ी निर्माण से जोड़ा जाये। रतलाम के शासकीय लक्ष्मी नारायण पांडे मेडिकल कॉलेज में सभी प्रकार के हृदय संबंधी उपचार एवं ऑपरेशंस के लिए कार्डियक ब्रांच स्थापित करने की भी घोषणा की। रतलाम में खेलों के लिए अधोसंरचना विकास एवं बुनियादी सुविधाओं की उपलब्धता का जिक्र करते हुए मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि शासन द्वारा रतलाम में 15 करोड़ रुपए की लागत से एकीकृत स्पोर्ट्स कांपलेक्स का निर्माण किया जा रहा है, जिसमें जूडो, कराटे, बैडमिंटन, कुश्ती, कबड्डी इत्यादि इनडोर खेल गतिविधियां आयोजित की जा सकेंगी। साथ 400 मीटर दौड़ के लिए सिंथेटिक ट्रैक भी बन रहा है। साथ ही 1200 लोगों की क्षमता के पवेलियन तथा जिम का निर्माण भी किया जा रहा है। जिले के आलोट में खेलों के लिए भूमि आवंटित कर दी गई है। पिपलोदा-रावटी में भी भूमि आवंटित की जा रही है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि मध्यप्रदेश, देश का ऐसा पहला राज्य होगा जहां हॉकी के लिए सर्वाधिक 12 एस्ट्रो टर्फ की सुविधा होगी। रतलाम में खेल गतिविधियों की सराहना करते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि सेव, सोना और साड़ी के लिए प्रसिद्ध रतलाम अब खेलों में भी अपनी विशेष पहचान स्थापित कर रहा है। इसमें चैतन्य काश्यप फाउंडेशन द्वारा विगत 25 वर्षों से आयोजित किया जा रहे खेल चेतना मेले का विशेष योगदान है। इस आयोजन से रतलाम की खेल प्रतिभाएं देश, प्रदेश में अपना नाम रोशन कर रही है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि प्रदेश में खेलों के विकास के लिए समग्र प्रयास किए जा रहे हैं।

देवास में सिलेंडर ब्लास्ट, घर में आग लगने से 4 की मौत

नीचे डेयरी में भड़की आग, ऊपर सो रहे पति-पत्नी और 2 बच्चों की जान गई

देवास (नप्र)। देवास में शनिवार तड़के एक घर में आग लग गई। दूसरी मंजिल पर सो रहे पति-पत्नी और दो बच्चों की दम घुटने से मौत हो गई। बताया जा रहा है कि नीचे डेयरी में गैस सिलेंडर के ब्लास्ट होने के कारण आग लगी है। पहली मंजिल पर डेयरी प्रोडक्ट्स रखे थे, जिससे आग बेकाबू हो गई।

घटना नयापुरा क्षेत्र की है। स्थानीय लोगों ने बताया कि घर में रखे गैस सिलेंडर में ब्लास्ट हुआ था। करीब तीन फायर ब्रिगेड ने आग पर काबू पाया। फायर ब्रिगेड कर्मचारी दूसरी मंजिल पर सो रहे परिवार के रेस्क्यू में जुट गई, लेकिन ऊपर जाने का रास्ता सकरा होने से टीम रेस्क्यू नहीं कर पाई।

एक ही परिवार के चार लोगों की मौत- हादसे में दिनेश कारपेंटर (35), उनकी पत्नी गायत्री कारपेंटर (30), बेटी इशिका (10) और बेटे चिराग (7) की मौत हो गई। घटना की जानकारी मिलते ही एसपी पुनीत गेहलोद मौके पर पहुंचे। आग लगने के कारणों का पता लगाने के लिए एफएसएल टीम जांच करेगी।

आग लगने के कारणों का पता लगाया जा रहा- एसपी पुनीत गेहलोद ने बताया, नयापुरा में एक डेयरी संचालक दिनेश कारपेंटर की दुकान की नीचे थी और उनका परिवार ऊपर रहता था। आग लगने के दौरान दिनेश कारपेंटर और उनका परिवार घर में मौजूद था। अभी पुलिस की टीम मौके पर है। फोरेंसिक टीम के साथ मिलकर आग लगने के कारणों का पता लगाया जा रहा है। ऐसी संभावना है कि कुछ इंफ्लेमेबल मटेरिल फर्स्ट फ्लोर पर स्टोर करके रखा गया था, इसकी जांच जारी है। डेयरी में रखे सिलेंडर में ब्लास्ट से आग भड़की। यहां और भी सिलेंडर रखे मिले हैं।

सिंगल रास्ता होने से रेस्क्यू में आई दिक्कत- नगर निगम दमकल विभाग के अभिनव चंदेल ने बताया कि सुबह 4:48 बजे नयापुरा क्षेत्र में आर्यन मिल्क कॉर्नर पर एलपीजी सिलेंडर ब्लास्ट होने की सूचना मिली थी।

भोपाल का तापमान

अधिकतम 25 °c न्यूनतम 18°c

सुबह सवेरे

इंदौर ■ रविवार, 22 दिसंबर 2024

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

केरल हाईकोर्ट पहुंचा मामला, हलफनामे में छिपाई थी संपत्ति

मुश्किल में प्रियंका, जा सकती है संसद सदस्यता!

वायनाड (एजेंसी)। केरल की वायनाड लोकसभा सीट से निर्वाचित कांग्रेस सांसद प्रियंका गांधी की मुश्किलें बढ़ सकती हैं। क्योंकि बीजेपी नेता नव्या हरिदास ने केरल हाई कोर्ट में कांग्रेस सांसद के खिलाफ याचिका दायर की है। नव्या ने अपनी याचिका में प्रियंका गांधी की वायनाड लोकसभा सीट से निर्वाचन को चुनौती दी है। याचिका में दावा किया गया है कि उपचुनाव के दौरान नामांकन पत्र में प्रियंका गांधी ने खुद की और अपने परिवार की संपत्ति की सही जानकारी का उल्लेख नहीं किया है। आरोप है कि प्रियंका गांधी ने चुनावी पत्र में गलत आंकड़े बताए हैं। इस बारे में नव्य हरिदास का कहना है कि यह आदर्श आचार संहिता का उल्लंघन है। उन्होंने इसे भ्रष्ट आचरण करार दिया है। केरल हाईकोर्ट में याचिका दायर होने के बाद अब प्रियंका गांधी की वायनाड से सांसदी सवालों के घेर में आ गई है। भारतीय जनता पार्टी की नेता नव्या हरिदास 13 नवंबर को हुए वायनाड लोकसभा सीट के उपचुनाव में कांग्रेस नेता प्रियंका गांधी के खिलाफ मैदान में थीं। लेकिन नव्या गांधी से 5,12,399 मतों से हार गई थीं।।

वे भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के सत्यन मोकेरी से काफी पीछे तीसरे स्थान पर रही थीं। बता दें,

लोकसभा चुनाव में कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने रायबरेली के साथ-साथ वायनाड सीट से जीत हासिल की थी। इसके बाद उन्होंने रायबरेली सीट अपने पास रखते हुए वायनाड सीट से इस्तीफा दे दिया था। इसके बाद वायनाड में हुए उपचुनाव में प्रियंका गांधी ने जीत दर्ज की थी। इस सीट से उन्होंने भाजपा नेता नव्या हरिदास को पांच लाख से ज्यादा वोटों के मार्जिन से शिकस्त दी थी। इसके बाद अब नव्या हरिदास ने केरल हाई कोर्ट में प्रियंका गांधी की सदस्यता को चुनौती देने की याचिका दायर की है। उन्होंने बताया कि इस मामले पर सुनवाई जनवरी 2025 में हो सकती है। बीजेपी नेता का कहना है कि हाई कोर्ट में 23 दिसंबर से 5 जनवरी तक अवकाश के चलते मामले की सुनवाई बाधित रहेगी। बता दें, प्रियंका गांधी ने अपने चुनावी हलफनामे में बताया था कि उनके पास कुल 4.24 करोड़ रुपये की चल संपत्ति है जबकि कुल अचल संपत्ति 13.89 करोड़ रुपये की है। वहीं प्रियंका ने बताया था कि उनके पति रॉबर्ड वाड्रा के पास कुल 37.91 करोड़ रुपये की चल संपति है। इस चुनावी हलफनामे के मुताबिक प्रियंका गांधी पर करीब 15 लाख 75 हजार रुपये का कर्ज है।

संक्षिप्त समाचार

3 मंजिला इमारत गिरी, 15 लोग दबे

इसमें जिम चल रहा था, बगल में बेसमेंट खुदाई से हादसा

मोहाली (एजेंसी)। पंजाब के मोहाली में शनिवार को 3 मंजिला बिल्डिंग गिर गई है। इस बिल्डिंग के मलबे में 15 लोगों के दबे होने की आशंका है। मौके पर पुलिस और प्रशासन

के अधिकारी पहुंच गए हैं। रेस्क्यू ऑपरेशन शुरू कर दिया गया है। शुरुआती जानकारी के मुताबिक इस बिल्डिंग में जिम चल रहा था। इसके बगल में बेसमेंट की खुदाई चल रही थी। जिससे बिल्डिंग की नींव कमजोर हो गई और वह गिर गई। जिस वक्त बिल्डिंग गिरी, उस वक्त जिम के खुले होने की सूचना है।

दिल्ली चुनाव से पहले केजरीवाल को बड़ा झटका

एलजी ने ईडी को दी एएपी प्रमुख के खिलाफ केस चलाने की मंजूरी

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली के पूर्व सीएम और आम आदमी पार्टी के प्रमुख अरविंद केजरीवाल को बड़ा झटका लगा है क्योंकि उपराज्यपाल वीके सक्सेना ने शराब घोटाले से जुडे केस में ईडी को केस चलाने की मंजूरी दे

दी है। केजरीवाल शराब घोटाले से जुड़े केस में पहले ही जेल जा चुके हैं और सुप्रीम कोर्ट द्वारा जमानत मिलने के बाद बाहर हैं लेकिन अब ईडी के नए केस से उनकी परेशानियां बढ़ सकती हैं। दरअसल, केंद्रीय एजेंसी प्रवर्तन निदेशालय ने 05 दिसंबर को अरविंद केजरीवाल पर केस चलाने के लिए दिल्ली के उपराज्यपाल वीके सक्सेना से अनुमति मांगी थी।

बांग्लादेश में 2 दिन में 3 हिंदू मंदिर पर हमला

कई मूर्तियां खंडित

ढाका (एजेंसी)। बांग्लादेश में पिछले कुछ वक्त से हिंदुओं के खिलाफ हिंसा थमने का नाम नहीं ले रही है। बीते दो दिन शुक्रवार और गुरुवार को भी बांग्लादेश में तीन मंदिरों को निशाना बनाया गया। हमलावरों ने इन मंदिरों पर

हमला कर कई मूर्तियों को खंडित कर दिया। बांग्लादेश के मैमनसिंह जिले में हलुआघाट पुलिस ने बताया कि हमलावरों ने शुक्रवार सुबह शाकुई संघ में बोंडेरपारा मंदिरों पर हमला कर दो मूर्तियों को खंडित कर दिया। इस घटना में कोई मामला दर्ज नहीं हुआ।

मध्यप्रदेश करप्शन का समुद्र बन गया है, जिसमें करप्शन रूपी सभी छोटी-बड़ी नदियां मिलती हैं : पटवारी

पर्ची से मुख्यमंत्री बने मोहन यादव की पर्ची, काफी महंगी हो चुकी है

भोपाल। प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष श्री जीतू पटवारी ने आज प्रदेश कांग्रेस मुख्यालय में आयोजित पत्रकार वार्ता को संबोधित करते हुये प्रदेश की एक वर्ष की भाजपा सरकार और उसमें व्याप्त भारी भ्रष्टाचार, कर्ज और अपराधों की श्रृखंला पर सरकार को कटघरे में खड़ा करते हये मोहन यादव सरकार पर प्रश्नचिन्ह लगाया है।

श्री पटवारी ने कहा कि जहां एक ओर भाजपा एक वर्ष पूरा होने पर जनकल्याण पर्व मना रही है वहीं भाजपा से संरक्षित नेताओं, अधिकारियों और छोटे से कर्मचारियों के यहां करोड़ों की बेनामी संपत्ति के मिलने के खुलासे हो रहे हैं तो कहीं करोड़ों रूपये के सोने और चांदी पकड़े जाने की खबरे सामने आ रही है। इससे स्पष्ट है कि मोहन यादव की सरकार में बड़े स्तर पर भ्रष्टाचार हो रहा है। हाल ही में सामने आये भ्रष्टाचार के मामले, जिसमें एक आरटीओ आरक्षक के यहा से करोड़ों रूपयें की संपत्ति मिली है। करप्शन के समुद्र का आरटीओ विभाग का यह मामला सबसे छोटी मछली है, तो प्रदेश में कितने बड़ी-बड़ी मछलिया होगी, इसका अनुमान लगाया जा सकता है। आयकर और लोकायुक्त के छापे पड़ रहे हैं, जिसमें अधिकारियों, कर्मचारियों के यहां लाखों-करोड़ों रूपयों की बेनामी संपति मिल रही है, सरकार के एक साल की यही सच्चाई है।

श्री पटवारी ने कहा कि 20 से प्रदेश में भाजपा की सरकार है, यह सरकार जनता की नहीं, माफियाओं की सरकार हैं, जो भाजपा की सांठगांठ से चल रही है, जिसे पहले शिवराज सिंह ने चलाया और अब मोहन यादव चला रहे हैं। शिवराज सिंह की झूठी-सच्ची योजनाओं के दम पर चुनाव हुआ और मोहन यादव को पर्ची के जरिये मुख्यमंत्री बना दिया गया और पर्ची से बने मुख्य मंत्री मोहन यादव की पर्ची काफी महंगी पची हो गई है, कर्ज की सरकार चल रही है। प्रत्येक व्यक्ति पर 70 हजार का कर्ज है और सरकार द्वारा कर्ज के नाम पर राजनीतिक अय्याशी की जा रही है। मेरे पास इससे नीचे का काई शब्द नहीं है। सरकार का जब कर्ज से पेट नहीं भरता है तो संपत्तियां बेचते हैं। अब तक 10 हजार करोड़ की संपति बेची जा चुकी है।

जीतू पटवारी ने कहा कि धांधली का सोना मंत्रियों का है जो गाड़ियों में लावारिस मिलता है। हाल ही में भोपाल में 52 किलो सोना मिला, 11 करोड़ केश मिला है। मैं फिर कहूंगा कि मोहन यादव की पर्ची बहुत महंगी है, सोने की थाल में सरकार खाना खा रही है और देष भर में किसान डंडे खा रहे हैं। यहां सिपाही ही करोड़पति है। एनसीआरबी के आंकड़े कहते हैं जमीन के सबसे ज्यादा घपले-घोटाले एमपी में ही हो रहे हैं। जिसमें मप्र टाप फाइव की श्रेणी में है।

श्री पटवारी ने कहा कि प्रदेश में आइटी की लगातार रेड हो रही है, आरटीओ का छापा मामले में सबसे छोटी मछ्ली सामने आई हैं। आरटीओ के अधिकारी का हवाला देते हुये उन्होंने बताया कि 35 करोड़ महीना की उगाही हो रही हैं। बीते 15 साल में 15 हजार करोड़ की धांधली हुई हैं। चुनाव में बीजेपी के उम्मीदवारों को 6-6 करोड़ दिए गए। हैलीकॉप्टर से पैसा पहुंचाया गया। बीजेपी में चोरी के माल का रगड़ा चल रहा है। कांग्रेस विधायक विधानसभा में पूछते हैं कोई प्रष्न करते हैं तो भाजपा बताती नहीं केवल तीन दिन विधानसभा चली सरकार ने अपने कागजी काम निपटाये, बिल पास कराए और खत्म। उन्होंने कहा कि टेंडर में 50 प्रतिशत का खेल हो रहा है।

श्री पटवारी ने कहा कि भोपाल के जंगल में मिली कार से न सिर्फ कला खजाना मिला है, बल्कि अब इस खजाने से जुड़े कई सियासतदार और अफसरों के चौंकाने वाले नाम भी सामने आने की आशंका है। परिवहन विभाग के पूर्व कर्मचारी सौरभ शर्मा और उसके साथी चेतन गौर पर लोकायुक्त छापे में बड़ी संख्या में संपत्ति के दस्तावेज, नगद राशि, और सोना, चांदी, एवं महंगे आइटम मिले हैं, जिसकी अनुमानित की घर का सामान लगभग 30 लाख रूपये, नगर राशि 1 करोड़ 72 लाख, चांदी 2 करोड़ 10 लाख, नगर 1 करोड़ 72 लाख, चादी 2 करोड़ 10 लाख, यानि कुल 4 करोड़ 12 लाख। सामान, वाहन और घर के सामान की कुल कीमत -2,21,00,000, सोना व हीरा के आभूषण 50,00,000/ यानि कुल कीमत रू 3,86,00,000 दो स्थानों पर हुई छोपेमारी में कुल अभी तक मिले सामान, आभूषण, चांदी व नगदी कुल राशि लगभग 8 करोड़ के आसपास है।

एम्स भोपाल में वर्ल्ड मेडिटेशन डे पर सूर्य त्राटक और ध्यान सत्र का आयोजन

भोपाल। एम्स भोपाल के कार्यपालक निदेशक प्रो. (डॉ.) अजय सिंह के मार्गदर्शन में आयुष विभाग द्वारा पहली बार वर्ल्ड मेडिटेशन डे का आयोजन शनिवार, 21 दिसंबर 2024 को किया गया। सुबह 7 बजे से प्रारंभ हुए इस आयोजन में डॉक्टर, नर्स, मरीज और अन्य लोग शामिल हुए। इस अवसर पर प्रो. सिंह ने कहा, 'वर्ल्ड मेडिटेशन डे का उद्देश्य है कि प्राचीन ध्यान विधियों को आधुनिक जीवनशैली में समाहित किया जाए। सूर्य त्राटक और ध्यान जैसी तकनीकें मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य के लिए अद्भुत परिणाम देती हैं।'

कार्यक्रम की मुख्य विशेषताओं में सूर्य त्राटक, ध्यान सत्र, ॐ के रूप में मानव श्रृंखला और यौगिक अभ्यास व स्वाध्याय शामिल थे। प्रतिभागियों ने सूर्योदय के समय सूर्य त्राटक कर सूर्य की उत्तरायण किरणों को आत्मसात किया। यह यौगिक ध्यान तकनीक प्राचीन ग्रंथों में वर्णित है और मानसिक स्पष्टता, दृष्टि सुधार, और आध्यात्मिक उन्नति के लिए प्रसिद्ध है। सूर्य त्राटक के लाभों में दृष्टि में सुधार, एकाग्रता में वृद्धि, तनाव में कमी और ऊर्जा में वृद्धि शामिल हैं। ध्यान सत्र के दौरान प्रतिभागियों को मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य में सुधार के लिए प्राणायाम और ध्यान का अभ्यास कराया गया।

इसके अलावा, प्रतिभागियों ने ॐ का आकार बनाकर ध्यान की महत्ता का प्रदर्शन किया और योग, प्राणायाम तथा स्वाध्याय का भी अभ्यास किया। संयुक्त राष्ट्र की घोषणा के अनुसार अब हर वर्ष 21 दिसंबर को वर्ल्ड मेडिटेशन डे मनाया जाएगा। यह दिन, जब सूर्य उत्तरायण में प्रवेश करता है और दिन बड़े होने लगते हैं, सकारात्मक ऊर्जा और स्वास्थ्य के लिए शुभ माना जाता है।

आयुष विभाग के वरिष्ठ मेडिकल ऑफिसर डॉ. दानिश जावेद और योग प्रशिक्षक चंचल सूर्यवंशी ने ध्यान और योग के महत्व पर अपने विचार साझा किए। उन्होंने बताया कि ध्यान नियमित अभ्यास से मन, विचार और इंद्रियों को नियंत्रित करने का सशक्त माध्यम है। यह कार्यक्रम न केवल एक नई परंपरा की शुरुआत है, बल्कि मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य के लिए ध्यान और योग की भूमिका को भी रेखांकित करता है।

सेना के 'ऑपरेशन क्लीन' से शांति की ओर मणिपुर

इंफाल (एजेंसी)। मणिपुर में जातीय हिंसा के 600 दिन रविवार को पूरे हो जाएंगे। इन 600 दिनों में ऐसा पहली बार हुआ है, जब लगातार एक महीने से हिंसा की कोई घटना नहीं हुई। छिटपुट प्रदर्शन के लिए भी मैतेई-कुकी समुदायों की महिलाएं सड़कों पर नहीं उतरीं। सरकारी दफ्तर रोजाना खुल रहे हैं और स्कूल में बच्चों की तादाद बढ़ रही है। इसकी

वजह यहां चल रहा सेना का कश्मीर जैसा ऑपरेशन 'क्लीन' है। कश्मीर में सेना जहां भी सर्च ऑपरेशन चलाती है, वहां पूरे इलाके को आतंक से क्लीन करने के बाद ही सामाजिक गतिविधियों को पटरी पर लाने का काम होता है। मणिपुर में भी कुछ ऐसा ही ऑपरेशन हो रहा है। 30 दिन में उग्रवादी संगठनों के 20 उग्रवादी कैडर पकड़े गए।

एम्स भोपाल में हाइड्राडेनाइटिस सुप्पुरेटिवा का आधुनिक शल्य उपचार

भोपाल। एम्स भोपाल के कार्यपालक निदेशक प्रो. (डॉ.) अजय सिंह के मार्गदर्शन में, संस्थान ने एक बार फिर चिकित्सा अनुसंधान, नवाचार और स्वस्थ्य देखभाल के क्षेत्र में अपनी उत्कृष्टता को साबित किया है। हाल ही में संस्थान के बर्न एवं प्लास्टिक सर्जरी विभाग ने हाइड्राडेनाइटिस सुप्पुरेटिवा (एचएस) से पीड़ित दो मरीजों को सफल शल्य चिकित्सा के जरिए राहत दी है। यह एक पुरानी त्वचा की समस्या है, जो शरीर के उन हिस्सों को प्रभावित करती है जहां पसीने की ग्रंथियां और बालों के रोम अधिक होते हैं, जैसे कि बगल, शरीर के नितंबों के बीच और जांघों में। इस बीमारी से फोड़े, गांठें और घाव होते हैं, जो समय पर इलाज न मिलने पर काफी तकलीफदेह हो जाते हैं।

प्रो. सिंह ने कहा, हाइड्राडेनाइटिस सुप्पुरेटिवा जैसी जटिल बीमारियों का इलाज विशेषज्ञता और संवेदनशीलता की मांग करता है। हमारे यहां ऐसे मरीजों के जीवन को बेहतर बनाने के लिए अत्याधुनिक तकनीकों का उपयोग किया जा रहा है। यह पहल मध्य भारत में स्वास्थ्य सेवाओं के नए मानक स्थापित करने की दिशा में एक कदम है।

डॉ. गौरव चतुर्वेदी (एसोसिएट प्रोफेसर, बर्न एवं प्लास्टिक सर्जरी विभाग) ने इन मरीजों की सर्जरी की। ये मरीज लंबे समय से संक्रमण, घाव और शर्मिंदगी झेल रहे थे। अन्य सभी दवाओं और उपचारों के असफल रहने के बाद सर्जरी को ही अंतिम विकल्प माना गया। सर्जरी के दौरान संक्रमित और खराब त्वचा को हटाया गया और उसके स्थान पर स्वस्थ त्वचा से बने फ्लैप्स का इस्तेमाल किया गया, ताकि समस्या फिर से न हो। सर्जरी के बाद दोनों मरीज पूरी तरह स्वस्थ हैं और उन्हें अब किसी अतिरिक्त इलाज की जरूरत नहीं है। एक मरीज ने खुशी जाहिर करते हुए कहा कि वह अब बिना दर्द और शर्मिंदगी के सामान्य जीवन जी पा रहे हैं।

बरेली की टीम पहल की तर्ज पर रायसेन में 'सेवा समाधान'

टीम सेवा समाधान ने प्रारंभ किया सर्द राहत अभियान

रायसेन। बरेली की टीम पहल को आदर्श मानते हुए शहर में टीम सेवा समाधान की शुरुआत हुई है। सर्द राहत अभियान के साथ इसका श्री गणेश हुआ है। टीम सेवा समाधान ने सोशल मीडिया पर अपने संदेश के साथ मोबाइल नंबर शेयर किए हैं ताकि हर जरूरतमंद के लिए टीम सेवा समाधान खड़ी हो सके। इस पहल की लोगों में सराहना की जा रही है।

सोशल मीडिया के विभिन्न प्लेटफॉर्म पर जारी संदेश में कहा गया है कि रायसेन में आपको ऐसे किसी भी जरूरतमंद व्यक्ति की जानकारी है, जिसके पास ठंड से बचाव के लिए गर्म कपड़े,स्वेटर, कंबल नहीं है तो इनकी जानकारी साझा को जाए ताकि संबंधित को तुरंत मदद पहुंचाई जा सके ।ये मदद नहीं जिम्मेदारी है के स्लोगन के साथ सेवा कार्यों की शुरुआत की गई है। लोगों से अपील की जा रही कि वे मोबाइल नंबर 8109848483 पर कॉल करके ठंड में किसी की मदद कर सकते हैं।

सड़क किनारे गरीबों को ठंड में ठिठुरते देख 2017 में बनी थी टीम पहल

बरेली की टीम पहल को समाज में सेवा कार्यों के लिए पहचाना जाता है। इनके अभियानों में पर्यावरण, स्वच्छता, रक्तदान, निःशुल्क शिक्षा, निःशुल्क भोजन, इलाज के लिए आर्थिक सहायता आदि शामिल है। निर्धन बच्चों को निःशुल्क कोचिंग देने की बात हो या फिर गरीबों को कपड़े-भोजन-इलाज उपलब्ध कराने की और समाज में पर्यावरण-स्वच्छता जागरूकता लाने के प्रयास हो इन सबमे युवाओं की यह टीम पहल हमेशा खड़ी नजर आती है।

नवंबर 2017 में कुछ युवा सड़क किनारे खड़े थे तभी कुछ गरीबों को सर्दी में ठिठुरते देखा तभी ऐसे लोगों की मदद करने का ख्याल उनके मन मे आ गया। 19 नवम्बर 2017 को टीम पहल बनी। निःशुल्क भोजनालय, नेकी का योगदान, अन्नपूर्णा अभियान, रक्तदान के लिए टीम पहल हमेशा मुस्तैद रहती है।

इनका कहना है

टीम पहल बरेली शहर का मान है। युवाओं की इस टीम ने सेवाकार्यों से अपनी अनूठी पहचान बनाई है। शहर का हर वर्ग इस टीम की सराहना करता है। इनसे जितना सीखा जाए उतना कम होगा। टीम पहल की तर्ज पर रायसेन में टीम सेवा समाधान का उदय होना प्रशंसनीय है। समाज में सेवा कार्यों के लिए सेवा समाधान को हरसंभव सहयोग हम भी करेंगे।

- प्रशांत राठी,
समाजसेवी बरेली

हेल्थ और टर्म इंश्योरेंस अभी नहीं होंगे सस्ते

जैसलमेर में जीएसटी काउंसिल की बैठक में हो गया फैसला

राज्यों के विरोध के कारण टैक्स कम करने का प्रस्ताव अटका

जैसलमेर (एजेंसी)। हेल्थ और टर्म इंश्योरेंस पर फिलहाल जीएसटी कम नहीं होगा। जीवन बीमा और स्वास्थ्य बीमा पर जीएसटी कम करने के प्रस्ताव को अगली बैठक के लिए टाल दिया गया है। जीएसटी काउंसिल की बैठक में टर्म इंश्योरेंस, जीवन बीमा और स्वास्थ्य बीमा पर टैक्स कम करने का प्रस्ताव राज्यों के विरोध के चलते टल गया है। काउंसिल ने मंत्रियों से इस पर और अध्ययन करने को कहा है। शनिवार सुबह करीब 11 बजे से केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण की अध्यक्षता में जीएसटी काउंसिल की 55वीं बैठक जैसलमेर में चल रही है। बिहार के वित्त मंत्री सम्राट चौधरी ने कहा- बीमा पर जीएसटी कम करने के प्रस्ताव को अगली बैठक के लिए टाल दिया गया है। आज दो चरणों में बैठक हो रही है। पहले चरण की बैठक सुबह 11 से दोपहर पौने दो बजे तक चलेगी। इसके बाद शाम साढ़े चार बजे से दूसरे चरण की बैठक शुरू होगी। बैठक में केंद्रीय वित्त राज्य मंत्री पंकज चौधरी के साथ वित्त मंत्रालय के अधिकारी शामिल हुए हैं।

गढ़चिरौली जिले में 2 नक्सलियों का सरेंडर

8 लाख रुपए का ईनाम था, परिवार के दबाव में हथियार डाले

गढ़चिरौली (एजेंसी)। महाराष्ट्र के गढ़चिरौली में शनिवार को दो नक्सलियों ने सीआरपीएफ और पुलिस के सामने सरेंडर कर दिया। इन दोनों पर 8 लाख रुपए का इनाम था। पुलिस के मुताबिक 55 साल के रामसु दुर्गू पोयम उर्फ नरसिंह और 25 साल के रमेश कुंजाम उर्फ

गोविंद ने सरेंडर किया है। रामसु महाराष्ट्र के गढ़चिरौली का, जबकि रमेश छत्तीसगढ़ का रहने वाला है। दोनों नक्सलियों पर सरेंडर के लिए परिवार ने दबाव बनाया था। साथ ही गढ़चिरौली पुलिस की नक्सलियों पर लगातार बढ़ती कार्रवाई भी सरेंडर करने की बड़ी वजह है।

युवा पीढ़ी में ऊर्जा है, सही अवसर से वे गढ़ेंगे सफलता के नए कीर्तिमान : उप मुख्यमंत्री

विभिन्न कंपनियों में चयनित युवाओं को नियुक्ति पत्र वितरित किए

भोपाल। उप मुख्यमंत्री राजेन्द्र शुक्ल ने कहा है कि युवाओं को विभिन्न अवसर उपलब्ध कराकर उन्हें स्वाबलंबी बनाना है। युवा पीढ़ी में ऊर्जा है, सही अवसर से वे सफलता के नए कीर्तिमान गढ़ेंगे। उप मुख्यमंत्री ने टीआरएस महाविद्यालय रीवा में विवेकानंद कॅरियर मार्गदर्शन योजना के तहत विभिन्न कंपनियों में चयनित युवाओं को नियुक्ति पत्र प्रदान किए। इस अवसर पर डेक्कन मैनेजमेंट पुणे व महाविद्यालय के बीच एमओयू भी हुआ।

उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने कहा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति में छात्रों को अध्ययन के साथ रोजगार के अवसर की जानकारी देने का प्रावधान है। टीआरएस महाविद्यालय में इस कार्य की शुरूआत की जा चुकी है। उन्होंने कहा कि जिले के सभी महाविद्यालयों में विभिन्न कंपनियों को आमंत्रित कर छात्रों का कैम्पस चयन का मौका दिलाया जाए। छात्रों के मार्गदर्शन के लिये स्वरोजगार से संबंधित सेमिनार भी आयोजित किये जाएं।

उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने कहा कि कालेज चौराहे में आईटी पार्क का निर्माण प्रारंभ हो रहा है जहाँ देश की बड़ी-बड़ी कंपनियों के कार्यालय होंगे। हमारा प्रयास है कि रीवा में डेटा-सेंटर बनाया जाए। हर हाथ को काम मिले तथा जिले के हर खेत को पानी मिले तभी हमारा रीवा गरीबी व बेरोजगारी से मुक्त होगा। उन्होंने युवाओं से आह्वान किया कि आगे बढ़ने के लिए धैर्य के साथ टिके रहकर कार्य करें तभी वह तरक्की कर सकेंगे। उनकी तरक्की से ही प्रदेश व देश की तरक्की होगी। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने चयनित युवाओं को बधाई दी।

उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने उत्थान पत्रिका का विमोचन किया। उन्होंने महाविद्यालय से शिक्षा प्राप्त छात्र सुजीत तिवारी द्वारा निर्मित बांस के ईकोफ्रेंडली उत्पादों की सराहना की तथा उनके उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएं दी। प्राचार्य डॉ अर्पिता अवस्थी ने बताया कि महाविद्यालय में शिक्षा के साथ ही स्वरोजगार की उपलब्धता के अवसर के क्रम में गत दिनों आयोजित रोजगार मेले में एक हजार युवाओं का रजिस्ट्रेशन हुआ जिसमें से 288 चयनित किए गए।

परिक्रमा

बड़े अंतराल के बाद तोमर ने पूरी अवधि चलाया सत्र

अरुण पटेल

मध्यप्रदेश विधानसभा का सत्र लम्बे अंतराल के बाद न केवल पूरी अवधि तक चला बल्कि विधानसभा अध्यक्ष नरेंद्र सिंह तोमर ने इस अवधि में बड़ी ही सूझबूझ से होने वाले हंगामे की स्थिति पर काबू पाते हुए दस विधेयक भी पारित कराए। सबको साथ लेकर सदन चलाने के कौशल व तोमर की शैली को पक्ष और प्रतिपक्ष दोनों के सदस्यों ने सराहा और उनकी तारीफ भी की। खाद संकट से लेकर सदन की पहली बैठक के 68 वर्ष पूर्ण होने पर भी सार्थक चर्चा कराई गई और ऐसा लगा मानो सदन के संचालन से सत्तापक्ष और विपक्ष लगभग संतुष्ट नजर आए। वैसे शोर-शराबा करना विपक्ष का एक हथियार है लेकिन सदन ने जो कामकाज निपटाया वह काबिले तारीफ है। मध्यप्रदेश विधानसभा का 16 से लेकर 20 दिसम्बर तक जो सत्र चला उसमें 22 घंटे 35 मिनट सदन की कार्रवाई चली और इस दौरान खाद संकट से लेकर जल जीवन मिशन में गड़बड़ी को लेकर सदन में गहमागहमी का माहौल रहा लेकिन निर्धारित शासकीय कार्य में कोई विशेष व्यवधान नहीं पड़ा। इस सत्र में प्रथम अनुपूरक अनुमान एवं विभिन्न विधेयक भी पारित किए गए और पांच दिवसीय सत्र में विधायकों द्वारा 1766 सूचनाओं 888 तारांकित और 878 अतारांकित प्रश्न किए गए। सदन में स्थगन की सात सूचनायें प्राप्त हुई और 471 ध्यानाकर्षण सूचनायें दी गयीं। दस समितियों के 41प्रतिवेदन भी प्रस्तुत किए गए। अक्सर यह देखने में आया है कि विधानसभा के सत्र तो आहूत होते हैं लेकिन पूरे समय तक नहीं चल पाते तथा हंगामे की भेंट चढ़ जाते हैं और हंगामे में सरकार अपना कामकाज तो निपटा लेती है लेकिन विधायक अपनी बात अपने ढंग से सदन में प्रस्तुत नहीं कर पाते और जनता से जुड़े मुद्दे शोरगुल की भेंट चढ़ जाते हैं। आजकल संसद और राज्य विधानसभाओं में अक्सर कार्रवाई हंगामे की भेंट चढ़ जाती है। यह स्थिति अक्सर सत्ताधारी दल के लिए मुफीद होती है क्योंकि वह तो अपना कामकाज निपटा लेता है लेकिन यह फोरम जो कि सार्थक बहस और विचार-विमर्श के लिए होते हैं उनमें वही नहीं हो पाता जो कि होना चाहिये। मध्यप्रदेश में भी काफी अंतराल के बाद विधानसभा का कोई सत्र अपनी निर्धारित अवधि तक चला। शीतकालीन सत्र 16 से 20 दिसम्बर तक के लिए बुलाया गया था और शुक्रवार 20 दिसम्बर को सत्रावसान हो गया। इस सत्र के दौरान रात 10 बजे तक बैठक हुई। जगह-जगह से समाचार आ रहे थे कि किसानों को पर्याप्त मात्रा में खाद और बीज नहीं मिल रहा है, उनकी समस्या पर भी सदन में चर्चा हुई और 17 दिसम्बर को मध्यप्रदेश विधानसभा की पहली बैठक के 68 साल पूरे होने पर विशेष चर्चा भी कराई गई। भले ही कुछ हंगामे के दृश्य उपस्थित हुए हों लेकिन पूरा सत्र हंगामे की भेंट नहीं चढ़ पाया और 10 विधेयक और 2 अशासकीय संकल्प सर्वसम्मति से पारित किए गए।

सदन के सुव्यवस्थित व कुशल संचालन का श्रेय खुले दिल से सत्तापक्ष व प्रतिपक्ष के विधायकों ने नरेंद्र सिंह तोमर को दिया, जिन्होंने सामंजस्य बनाते हुए न केवल महिला सदस्यों को प्रश्न पूछने के लिए मंगलवार का दिन आरक्षित कर दिया बल्कि इसके साथ ही दोनों पक्षों को अपनी-अपनी बात रखने का भरपूर मौका भी दिया। जहां तक मध्यप्रदेश विधानसभा का सवाल है सत्र में बैठकों की संख्या निरंतर घटती जा रही थी, जिसको लेकर सत्तापक्ष व विपक्षी सदस्यों ने चिंता भी जताई। वास्तव में पिछले पांच-छः साल का कालखंड देखा जाए तो कोई भी विधानसभा का सत्र निर्धारित अवधि तक नहीं चला, भले ही सरकार का काम निपट गया तो लेकिन हंगामे भी होते रहे। 2018 का वर्ष देखा जाए तो 128 दिन सदन की बैठकें होनी थीं लेकिन 79 दिनों में भी कामकाज निपटा लिया गया। मार्च-अप्रैल 2020 में बजट सत्र 17 दिन के लिए बुलाया गया था लेकिन दो दिन में ही समाप्त हो गया था। हंगामे के बीच भले ही जरुरी सरकारी कामकाज हो गया हो लेकिन आम जनता के जीवन से जुड़े सवाल अनुत्तरित ही रह गये। 2021 में 23 दिन में से सिर्फ 15 दिन ही सदन की बैठकें हुईं, 2023 में भी 17 दिन बैठकें होना थी लेकिन 15 हो पाईं। जुलाई 2024 में 14 दिन का सत्र मात्र पांच दिन में ही समाप्त हो गया। हालात ऐसे बने की अधिकतर विधेयक बिना चर्चा के ही ध्वनिमत से पारित हो गये। वैसे इस सत्र में गुरुवार 19 सितम्बर को ही सरकारी कामकाज पूरा हो गया था लेकिन शुक्रवार को चूंकि अशासकीय संकल्प का दिन होता है और खासकर यह दिन विधायकों के लिए काफी महत्वपूर्ण होता है इसलिए विधानसभा अध्यक्ष तोमर ने शुक्रवार को भी सदन को जारी रखा और अशासकीय संकल्प प्रस्तुत किए गए, उसके बाद बैठक स्थगित हो गयी।

पंचायत एवं ग्रामीण विकास मंत्री प्रहलाद सिंह पटेल ने विधानसभा अध्यक्ष का एक वर्ष का कार्यकाल पूरा होने पर कहा कि सदन की गरिमा विधायकों की उपस्थिति से बढ़ती है और आज जो स्थिति है वह इसका प्रमाण है। सामान्यतः विधानसभा में एक बैठक में दो ध्यानाकर्षण प्रस्ताव लेने की परम्परा रही है और बाकी प्रस्ताव कार्यसूची में तो आ जाते हैं लेकिन उन पर सदन में चर्चा नहीं होती, हालांकि यह पता चल जाता है कि किस विधायक ने क्या मुद्दा उठाया। सदन में प्रथम अनुपूरक बजट के पास होने के साथ ही जन विश्वास, निजी स्कूल फीस निर्धारण नियंत्रण विनियमन सहित दस विधेयक पारित हुए जबकि 41 प्रतिवेदन प्रस्तुत किए गए थे। तोमर ने महिला सदस्यों के लिए मंगलवार का दिन आरक्षित करने का नवाचार भी किया। नल-जल योजना को लेकर सदन में सरकार घिरती हुई नजर आई और पक्ष-विपक्ष के सदस्यों ने मंत्री की जमकर घेराबंदी की। लोक निर्माण मंत्री राकेश सिंह का कहना था कि लम्बे अंतराल के बाद यह संभव हुआ कि विधानसभा की सभी निर्धारित तिथियों में कार्रवाई हुई। विधानसभा अध्यक्ष ने कार्रवाई सुचारु रुप से संपन्न कराई और कहीं भी कोई अमर्यादित आचरण नहीं हुआ।

और यह भी

नेता प्रतिपक्ष उमंग सिंघार ने अपने विधायक साथियों के साथ संविधान की प्रति लेकर विधानसभा के सत्र के अंतिम दिन प्रदर्शन किया और आम्बेडकर के अपमान को मुद्दा बनाते हुए सदन के बाहर विधानसभा परिसर में नारेबाजी की। सदन में भी सभी कांग्रेस विधायक नीला गमछा पहनकर आये। नेता प्रतिपक्ष सिंघार ने मीडिया से चर्चा करते हुए आरोप लगाया कि भाजपा संविधान निर्माता का अपमान कर रही है।

चौथे दिन भी एमपीपीएससी के सामने डटे 2 हजार स्टूडेंट

- अनशन पर बैठा छात्र बेहोश, दंडवत यात्रा निरस्त, कल निकलेगी

इंदौर (नप्र)। एमपीपीएससी अभ्यर्थियों का प्रदर्शन पिछले बुधवार से जारी है। चौथे दिन भी करीब 2 हजार स्टूडेंट धरना स्थल पर पहुंचे हैं। इंदौर के अलावा आसपास के शहरों से भी अभ्यर्थी यहां आ रहे हैं। धरना स्थल पर सुबह कई अभ्यर्थी अपनी पढ़ाई करते नजर आए। वहीं, अनशन पर बैठे अरविंद सिंह भदौरिया बेहोश हो गए। वे गुरुवार रात से राधे जाट के साथ आमरण अनशन पर थे, आसपास मौजूद अभ्यर्थी और यूनियन के पदाधिकारी ने उन्हें संभाला। स्टूडेंट लीडर राधे जाट ने बताया कि आज दंडवत् यात्रा निरस्त कर दी है। कल निकाली जाएगी।

- **युवक कांग्रेस करेगी प्रदर्शन-** युवक कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष मितेंद्र सिंह भी स्टूडेंट के बीच पहुंचे हैं। इस दौरान उन्होंने कहा कि युवक कांग्रेस पूरे प्रदेश में सीएम के पुतले का दहन करेगी।
- **धरना स्थल पर ही पढ़ाई की व्यवस्था-** नेशनल एजुकेटेड यूथ यूनियन के बैनर तले हो रहे इस प्रदर्शन में शनिवार को धरना स्थल पर ही कोचिंग क्लास, लाइब्रेरी वाले स्टूडेंट्स को पढ़ाएंगे, ऐसी व्यवस्था यहां की जा रही हैं। बुधवार सुबह 10 बजे से इस आंदोलन की शुरुआत हुई थी।

स्टूडेंट्स अलग-अलग तख्तियां लिए आए नजर

धरना प्रदर्शन में अभ्यर्थी पुष्पा मूवी के फेमस डॉयलॉग को भी लेकर पहुंचे। हालांकि ये डॉयलॉग स्टूडेंट्स पर बेस था। इसके अलावा स्टूडेंट्स अलग-अलग तख्यतियां लिए नजर आए। आंदोलन को बाप पार्टी के विधायक कमलेश्वर डोडियर ने भी समर्थन दिया।

इंदौर में वोटर 28 लाख, वाहन 32 लाख के पार

मप्र में गाड़ियां रजिस्ट्रेशन मामले में सबसे आगे; वाहनों का पंजीयन भी हर साल ज्यादा

इंदौर (नप्र)। इंदौर एक नया कीर्तिमान रचने जा रहा है। पहली बार ऐसा होगा जब इंदौर आरटीओ में 2 लाख से अधिक वाहन रजिस्टर्ड होंगे। बीते साल यह आंकड़ा 1 लाख 90 हजार तक पहुंचा था। पिछले साल का यह रिकार्ड अब टूट चुका है। मप्र के ऑटोमोबाइल सेक्टर को उम्मीद है कि इस बार इंदौर 2 लाख से ज्यादा गाड़ियां बेचकर एक नया रिकॉर्ड अपने नाम करेगा। परिवहन विभाग से मिली जानकारी के अनुसार इस साल बुधवार तक 1 लाख 93 हजार 801 वाहन इंदौर आरटीओ में रजिस्टर्ड हो चुके हैं, जबकि बीते साल एक जनवरी से लेकर 31 दिसंबर तक यह आंकड़ा 1 लाख 90 हजार 297 था। अभी भी इस साल के खत्म होने में 12 दिन बाकी हैं।

इससे तय है कि यह आंकड़ा दो लाख पार हो जाएगा। ऑटोमोबाइल एक्सपर्ट मनोहर यादव ने बताया कि ईयर एंड के ऑफर के चलते कई कार कंपनियां 50 हजार से लेकर डेढ़ लाख तक का डिस्कांउट दे रही हैं, जिससे उम्मीद है कि इस बार इंदौर सारे रिकॉर्ड तोड़ेगा।

बता दें कि इंदौर में वाहनों की संख्या अब 32 लाख 25 हजार से ज्यादा हो गई है जो की इंदौर के वोटर से ज्यादा है। इंदौर में वोटर की संख्या लगभग 28 लाख हैं।इस साल ऑटोमोबाईल सेक्टर में 17 से 18 प्रतिशत की ग्रोथ देखने को मिल रही हैं।

7 करोड़ की कार रही सबसे महंगी- इंदौर में वैसे तो 12 करोड़ रूपए की रोल्स-रॉयस सहित कई अन्य लग्जरी कारें मौजूद है जिनकी कीमत 4 करोड़ रूपए से ज्यादा है। लेकिन इस साल सबसे महंगी कार इंदौर में 7 करोड़ रूपए की रजिस्टर्ड हुई है।

वैसे तो 1 करोड़ रुपए से अधिक कीमत वाले कई वाहन इंदौर में रजिस्टर्ड हुए हैं, लेकिन सबसे अधिक कीमत की कार बेंटले बेंटायगा थी।जो इंग्लैंड से आई थी और इसकी कीमत 7 करोड़ से अधिक थी, इसके अलावा कई अन्य महंगी कारें भी रजिस्टर्ड हुई हैं।

ऑटोमोबाइल सेक्टर में 17 से 18 प्रतिशत की ग्रोथ

इंदौर ऑटोमोबाइल डीलर्स एसोसिएशन के जॉइंट सेक्रेटरी विशाल पमनानी ने बताया कि इस साल ऑटोमोबाईल सेक्टर में 17 से 18 प्रतिशत की ग्रोथ देखने को मिल रही हैं। क्योंकि इस साल रविवार तक 1 लाख 90 हजार से ज्यादा गाड़ी रजिस्टर्ड हो चुकी थी। वहीं अगले 15 दिन में 10 हजार गाड़ी ओर रजिस्टर्ड होगी तो यह पहली बार होगा जब इंदौर में इतनी बड़ी संख्या में नई गाड़ियों के रजिस्ट्रेशन को देखेंगे। वहीं आने वाले तीन महीने हमारे सर प्लस रहेंगे, इस लिहाज से देखा जाए तो 17 से 18 प्रतिशत की ग्रोथ रहेगी। वहीं अभी भी कंपनियों के पास अच्छी बुकिंग है। कंपनियों के ईयर एंड ऑफर के कारण लोग वाहन लेते हैं, जिससे यह तो तय है कि इस साल इंदौर एक नया रिकॉर्ड बनाएगा।

25 से ज्यादा 1 करोड़ रूपए की कार रजिस्टर्ड

इंदौर में सुपर और स्पोर्ट्स कारों की दीवानगी हाई लेवल हैं। इस आंकड़े से समझा जा सकता है कि 2024 में ही ऐसी 25 से ज्यादा कार बिकी हैं। जिनकी कीमत 1 करोड़ रूपए से ज्यादा है। ऑटो एक्सपर्ट बताते हैं कि मार्च 2025 तक लगभग 12 और ऐसी गाड़ियां इंदौर वासियों को डिलीवरी होना है, जिनकी कीमत 1 करोड़ रूपए से ज्यादा हैं।

पुलिस ने सीखा ध्यान और प्राणायाम

- स्वास्थ्य और तनाव मुक्ति के लिए लगी ध्यान-योग कार्यशाला

इंदौर (नप्र)। इंदौर में पुलिसकर्मियों के लिए ध्यान योग वर्कशॉप का आयोजन किया गया । विश्व ध्यान दिवस पर शनिवार को डीआरपी लाइन में कार्यशाला आयोजित की। जिसमें बड़ी संख्या में पुलिसकर्मी शामिल हुए। पुलिस की तनावपूर्ण और चुनौतीपूर्ण ड्यूटी के चलते पुलिसकर्मियों के शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य को ध्यान में रखते हुए पुलिस कमिश्नर संतोष कुमार सिंह के निर्देशन में ये कार्यशाला आयोजित की गई।ध्यान योग कार्यशाला में ध्यान और प्राणायाम के तरीके सीखे।

अति. पुलिस आयुक्त (अप./मुख्य.) मनोज कुमार श्रीवास्तव और पुलिस उपायुक्त (मुख्यालय) अंकित सोनी के मार्गदर्शन में, रक्षित निरीक्षक इंदौर दीपक कुमार पाटिल और उनकी टीम ने कार्यशाला में इंदौर

पुलिस के योग प्रशिक्षक गयेन्द्र यादव ने रक्षित केंद्र, कार्यालयों व थानों के पुलिसकर्मियों को ध्यान व योग के महत्व को बताते हुए सभी को ध्यान करने की विभिन्न मुद्राओं के माध्यम से ध्यान व प्राणायाम करने के तरीकों को समझाया। उन्होंने कहा ध्यान और योग के नियमित अभ्यास से जीवन मे आने वाले तनाव से मुक्ति मिलती है और मानसिक व शारीरिक स्वास्थ्य सुदृढ़ होता है। जीवन में सकारात्मकता और उत्साह का समावेश होता है, हमे इसका अभ्यास नियमित करना चाहिए।

जागरुकता के लिए जुंबा और मैराथन

एसजीएसआईटीएस का 72वां स्थापना दिवस ; उच्च शिक्षा मंत्री परमार होंगे शामिल

इंदौर (नप्र)। एसजीएसआईटीएस (1952) अपने स्थापना के 72 वर्ष पूरे करने जा रहा है। इस उपलक्ष्य में शनिवार को पूर्व छात्र संगठन कई प्रोग्राम आयोजित कर रहा है। एसोसिएशन अध्यक्ष इंजीनियर डी.एल. गोयल ने बताया कि शनिवार शाम 7 बजे उच्च शिक्षा मंत्री इंदर सिंह परमार एलुमनी मीट के मुख्य अतिथि के रूप में शामिल होंगे।प्रोग्राम में कॉलेज के पूर्व छात्र पंकज धारकर अध्यक्षता करेंगे।

एसोसिएशन के मानद सचिव डॉ.गिरीश गुप्ता ने बताया कि शनिवार सुबह स्वास्थ्य जागरूकता के लिए जुंबा और मैराथन दौड़ का आयोजन स्टूडेंट्स, एक्स स्टूडेंट्स, टीचर्स के लिए किया गया। मैराथन दौड़ साढ़े तीन किमी की थी, जो संस्थान परिसर से शुरू होकर मालवा मिल होते हुए रेलवे स्टेशन के प्लेटफार्म नंबर 5 से संस्थान परिसर पर आकर समाप्त हुई।शनिवार सुबह आयोजित कार्यक्रम में बड़ी संख्या में छात्र-छात्राएं शामिल हुई आयोजन की श्रृंखला में दोपहर में पारिवारिक मिलन समारोह और विभिन्न खेलकूद के आयोजन होंगे। इसमें अन्य स्टूडेंट्स के साथ विशेषतौर पर 1999 बैच (25 वर्ष) सिल्वर जुबली और 1974 बैच (50 वर्ष) गोल्डन जुबली पासआउट स्टूडेंट्स देश-विदेश से भाग लेने आएंगे।

इंदौर में 2 स्टूडेंट्स ने किया सुसाइड

11वीं की छात्रा और गेम डिजाइनिंग की पढ़ाई करने वाले युवक ने दी जान

इंदौर (नप्र)। इंदौर में दो स्टूडेंट्स ने सुसाइड कर लिया। शनिवार को दोनों का एमवाय अस्पताल में पीएम हुआ। दोनों ही मामलों में सुसाइड का कारण सामने नहीं आया है। इसमें एक 11वीं की छात्रा है, जबकि दूसरा गेम डिजाइनिंग की पढ़ाई करने वाला थर्ड ईयर का छात्र है। दोनों ही मामलों में पुलिस ने मर्ग कायम कर जांच शुरू कर दी है।

पहला मामला- स्कूल नहीं गई, बोली थी - वॉट्सऐप पर होमवर्क आ गया है- आजाद नगर थाना क्षेत्र के इदरिश नगर में ये घटना हुई। आजाद नगर पुलिस के मुताबिक विधि (17) पिता अनिल सोलंकी ने अपने ही घर में शुक्रवार को सुसाइड कर लिया।

छात्रा के मौसा सतीश बिल्लोर ने बताया कि शुक्रवार को विधि ने परिवार के लोगों को बताया कि वॉट्सऐप पर उसे स्कूल का होमवर्क आ गया है, तो वह स्कूल नहीं जाएगी। घर से ही पढ़ाई कर लेगी।

माता-पिता अपने काम पर चले गए। घर में 10 साल का छोटा भाई था। इस बीच विधि ने घर में फांसी लगा ली। भाई ने देखा तो आसपास के लोगों को सूचना दी। जिसके बाद परिवार के लोग मौके पर पहुंचे और उसे अस्पताल ले गए। घटना की जानकारी मिलने पर पुलिस ने मर्ग कायम किया और शनिवार को उसका पीएम करवाया। मौसा का कहना है कि विधि को कोई परेशानी नहीं थी, न ही ऐसी कोई बात सामने आई है। आजाद नगर थाने की एएसआई सुखमणी भगत ने बताया कि सुसाइड के कारणों का पता नहीं चला है न ही कोई सुसाइड नोट भी नहीं मिला है। पुलिस मामले की जांच कर रही है।

दूसरा मामला- फौजी के बेटे ने किया सुसाइड- विजय नगर थाना क्षेत्र के स्कीम नंबर 74 की घटना है। विजय नगर पुलिस के मुताबिक भोपाल के इंद्रप्रस्थ कॉलोनी के रहने वाले ओम (20) पिता घनश्याम विश्वकर्मा ने स्कीम नंबर 74 के एक होस्टल के रुम में शुक्रवार को सुसाइड कर लिया। वह इंदौर में बीते कुछ सालों से रहकर कॉलेज में पढ़ाई कर रहा था। युवक थर्ड ईयर का स्टूडेंट था। शुक्रवार को उसने रुम का गेट नहीं खोला तो होस्टल वार्डन ने पुलिस को सूचना दी। जिसके बाद पुलिस ने गेट खोला और शव को पीएम के लिए अस्पताल भेजा। शनिवार को उसका पीएम करवाया गया। पिता घनश्याम विश्वकर्मा ने बताया कि वे फौज में लांस नायक के पद पर है। 18 दिसंबर को ही उनकी बेटे से बात हुई थी। वीडियो कॉल पर भी वे बात करते थे।

साहित्य

चंद्रशेखर साकल्ले
लेखक साहित्यकार हैं।

विमर्शों के बीच एक नया विमर्श

हिन्दी साहित्य का परिसर हमेशा अनेक विमर्शों से घिरा रहता है। सहमति-असहमति,तर्क-वितर्क और वाद-विवाद सब एक साथ चलते रहते हैं। विगत कुछ दशकों से मुख्यतः तीन विमर्श चर्चा के केंद्र में रहे हैं।दलित विमर्श, स्त्री विमर्श और आदिवासी विमर्श। इसके अलावा दो ऐसे विमर्श हैं जो स्थायी रूप से वातावरण को गर्म किए रहते हैं।एक है वैचारिक प्रतिबद्धता का विमर्श और दूसरा है कविता में भाषा और अभिव्यक्ति की जटिलता का प्रश्न।

दलित विमर्श, स्त्री विमर्श और आदिवासी विमर्श ने अन्याय,अपमान और असमानता का दंश झेल रहे वर्गों में नई चेतना जगाई है।नव जागरण का वातावरण तैयार किया है। दलित विमर्श ने अपने समुदाय की पीड़ाओं को गहरी संवेदना के उभारा है,और अपनी बात समझाने में सफल भी रहा है। स्त्री विमर्श ने अपनी अस्मिता के लिए संघर्ष कर रही स्त्री को शक्ति प्रदान की है। स्त्रियों को कमतर समझने वाली पुरूष मानसिकता पर गहरी चोट की है। आज स्त्री लेखन प्रचुर संख्या में गुणवत्ता के साथ मुखर है। आदिवासी विमर्श ने लंबे समय तक लगभग गुमनाम रहे समुदाय की समस्याओं पर रौशनी डाली है। उसने जंगल और आदिवासियों के प्रति उत्सुकता और संवेदना जगाई है।

पर, ऐसा लगता है सफलता का लंबा रास्ता तय करने के बाद ये विमर्श कुछ ठिठक- से गए हैं। एकरस-सी सामग्री पढ़ने में आ रही है। अब इन्हें किसी चौराहे पर पहुँच कर नई राहें तलाश करनी चाहिए। क्योंकि जिन वर्गों से संबंधित ये विमर्श हैं,उन वर्गों का जीवन स्तर अब एक-सा नहीं रहा है ।बेशक बड़ा हिस्सा अब भी शोषित और दमित है,पर कुछ बदलाव भी आया है। दलित लेखन में शोषण, अन्याय और अपमान के विरुद्ध क्रोध और प्रतिशोध स्वाभाविक है,पर कई दलित शिक्षित होकर समाज की मुख्य धारा में शामिल हो चुके हैं,वहाँ उनकी अलग किस्म की समस्याएँ हैं।स्त्री लेखन में पुरूष के अहंकार और हिंसा पर काफी लिखा जा चुका है।

शिक्षित और आर्थिक रूप से स्वावलंबी महिला के जीवन में पति और परिवार से इतर एक भरापूरा संसार है।इसी तरह बहुत से आदिवासी युवा महानगरों में अपनी संस्कृति और आधुनिक संस्कृति के द्वंद्व में अपनी भाषा और संस्कृति को बचाने में संघर्षरत हैं।इन विषयों को भी लेखन का हिस्सा होना ।हो सकता है कहीं लिखा भी जा रहा हो,पर व्यापक रूप से नजर नहीं आ रहा है।

इन तीन विमर्शों के अलावा दो स्थायी विमर्श में पहला विमर्श वैचारिक प्रतिबद्धता का है। प्रतिबद्धता को टटोलने का प्रसिद्ध वाक्य मुक्तिबोध का है 'पार्टनर, तुम्हारी पालिटिक्स क्या है?' सामान्यतः लेखन में प्रतिबद्धता को वाम विचारों से जोड़ा जाता है।यह विचार इतना व्यापक हुआ कि वाम प्रतिबद्धता ही लेखन का पर्याय बन गई। वाम प्रतिबद्धता में सत्ता से असहमति, शोषण और असमानता के विरुद्ध आवाज़ जैसे आदर्श समाज के निर्माण के उपकरण हैं।लेकिन अब अन्य प्रतिबद्धताएं भी साहित्य की मुख्य धारा में अपनी पैठ जमाने में जुट गई हैं।भिन्न विचारधाराओं के प्रति प्रतिबद्धता का यह संघर्ष इन दिनों अपने चरम पर है।कई लेखकों के लिए विचारधारा कोई मूल्य नहीं रखती। उनमें से कुछ तो अवसरवादी होते हैं,जिधर बम उधर हम,और कुछ तुकबंदी और मंचीय कविताओं से वाहवाही बटोरते रहते हैं। इधर सोशल मीड़िया ने ऐसे बहुत-से लेखक पैदा कर दिए हैं,जो रोज दो-तीन की रफ़्तार से रचनाएँ पोस्ट करते हैं और लाइक्स गिनकर खुश होते रहते हैं।

दूसरा विमर्श कविता की भाषा और अभिव्यक्ति की जटिलता का है। आम धारणा बन गई है कि नई कविता सामान्य पाठक से दूर हो गई है।वह आपसी बोलचाल में उर्दू के शेर तो उद्धृत करता है,पर हिन्दी कविता की एक लाईन नहीं बोलता। इसमें कोई शक नहीं कि बहुत से कवि अपनी बौद्धिकता की धाक जमाने के लिए कविता को जटिल बनाते हैं,पर यह भी सही है कि उच्च बौद्धिक मष्तिष्क से जटिल ही संप्रेषित होगा,जिसे समझने के लिए गहरे रियाज़ की ज़रूरत होती है। दरअसल ऐसी कविता की एक चाबी होती है,जिससे उसे समझने का ताला खुलता है। इस चाबी को पहचानने के लिए अधिक-से-अधिक कविताएँ पढ़ने का अभ्यास जरूरी है।

इन दिनों एक नया विमर्श चर्चा में है। कुछ लेखक अपराध और सतही रूमानी साहित्य को गंभीर साहित्य के समकक्ष खड़ा करने का प्रयास करझ रहे हैं। उनका मानना है कि यह साहित्य लोकप्रिय है और इसे आम आदमी पढ़ता है। लोकप्रिय साहित्य की पुस्तकों का मूल्य कम होता है और वह बड़ी तादाद में बिकता है।जबकि गंभीर साहित्य की छोटी -सी पुस्तक भी बहुत महँगी होती है। गंभीर साहित्य बिकता भी बहुत कम है। तर्क यह भी है कि पश्चिम में लोकप्रिय साहित्य और गंभीर साहित्य के बीच कोई विभाजन नहीं है। हालाँकि लगता नहीं कि वहाँ भी अपराध साहित्य के किसी लेखक को काफ्का या कामू के बराबर माना जाता होगा। कल तक जिसे लुगदी साहित्य मानकर हाशिए से बाहर रखा गया था,आज उसके लेखक खुद को साहित्य की मुख्य धारा का हिस्सा समझने के लिए कह रहे हैं।

गंभीर साहित्य मनुष्य की जिजीविषा, संघर्ष, जीवटता और मानव मन की गहराई को प्रतिबिंबित करता है ।वह हमें अधिक मानवीय, करूणावान और लोकतांत्रिक बनाता है। जबकि लोकप्रिय साहित्य हमारी चेतना के उत्थान में कोई मदद नहीं करता। वह मनोरंजक अवश्य हो सकता है। पिछले दिनों एक वरिष्ठ आलोचक और एक प्रतिष्ठित पत्रिका के संपादक ने जब इस विषय पर लिखा कि 'गंभीर साहित्य सृजन होता है,जबकि लोकप्रिय साहित्य बाज़ार की माँग पर लिखा गया उत्पाद है' तो जासूसी उपन्यास के एक लेखक ने प्रतिवाद दर्ज करते हुए तर्क दिया कि लोकप्रिय साहित्य बिकता अधिक है। उन्होंने लेखन की गुणवत्ता को नहीं उसकी बिक्री संख्या को आधार बनाया।

ऐसा क्यों हो रहा है कि चुपचाप लिख कर पैसे कमाने वाले जासूसी उपन्यासों के लेखक अचानक साहित्य में सम्मान पाने के लिए आतुर हो उठे हैं।शायद उन्होंने भाँप लिया हो कि अब ऐसी ही प्रतिभा का सम्मान है जो लोकप्रिय और धन कमाने वाली हो। लोकप्रिय साहित्य शोध का विषय हो सकता है,पर क्या उसे पाठ्यक्रमों का हिस्सा होना चाहिए?

कविता

गुल्लक

देवेंद्र सिंह सिसौदिया

संतान
होती है
माता - पिता की गुल्लक
जिसमें वह
समय - समय पर
संस्कृति एवं संस्कार
जमा करता है ।

गुल्लक
इस भरोसे को
कच्ची मिट्टी की दीवारों
के मध्य
दृढ़ता के साथ
सुरक्षित रखती है ।

और
समय आने पर
संस्कारित होने का
परिचय देती है
फिर...
चाहे उसे
अपना बलिदान ही
क्यों न देना पड़े ।

अनुभव

हर कदम काम की एक सीख

अमर ख़नूजा चड्ढा

बात उन दिनों की है जब मैं कार चलाना सीख रही थी। डैडी ने मुझे पहले कार चलाने की बेसिक जानकारी दी। कहा ए.बी.सी. यानी एक्सीलरेट , ब्रेक और क्लच का फ़ंडा है जिसे याद रख लो। सरल तकनीक है।

फिर दो दिन ड्राइवर के साथ कार सीखने भेजा और कहा रात को सोते समय यही ख़याल करो कि तुम कार में बैठी हो,स्टीयरिंग को घुमा रही हो और आगे और साइड में लगे व्यू मिरर को देख रही हो। किसी लंबे सफ़र पर निकल पड़ी हो। फिर तो मैं भी इस तरह अपने विचारों में कभी सेक्टर 6 कभी सेक्टर 9 की सड़कों में रोज़ ही कार चलाते कहीं ना कहीं चल पड़ती थी। दो-तीन दिन ड्राइवर के साथ नियमानुसार गाड़ी चलाई। एक दिन ज़ोर की बारिश थी। दूसरे दिन ड्राइवर आधी छुट्टी लेकर चला गया। तीसरे दिन डैडी ने कोर्ट से आने के बाद मेरे हाथ में चाबी थमा दी कि 'प्रैक्टिस मेक्स ए मैन परफ़ेक्ट। जाओ। ये सब बिना नागा सीखना चाहिए।'

मैंने खुले मैदान में गाड़ी की कमान सम्भाली। आज की प्रगति देख ड्राइवर ने कहा 'दीदी अब आप सड़क पर कार चलाओ।'

मैं थोड़ी झिझकी लेकिन उसने हिम्मत बंधाई।

गाड़ी सीधी सड़क पर आ गई हल्की बारिश भी शुरू हो गई। अचानक उसने कहा अब गली के अंदर गाड़ी मोड़ लो। इंडिकेटर देने और वाइपर के चक्कर में पैर क्लच या ब्रेक की उलझन पड़ गया और अचानक ज़ोर के धमाके की आवाज़ सुनाई दी। कार किसी पेड़ से टकरा चुकी थी। मैं बुरी तरह डर गई। नीचे उतर कर देखा तो बोनट का अच्छा ख़ासा नुक़सान हो चुका था। मैं रुआंसी हो गई।

ड्राइवर ने गाड़ी संभाली और हम घर पहुँचे।

डैडी ने मेरी सूरत देखी, पूछा क्या हुआ ? मैं दुखी हो कर कहने लगी, अब मैं कार चलाना सीखूंगी ही नहीं। मुझसे नहीं हो सकेगा। मैंने नुक़सान कर दिया। डैडी हंसने लगे। ये तो मटेरियल है। कहीं तुम्हें या ड्राइवर को तो चोट नहीं आई,पहले ये बताओ?

और तुमने कहां गलती की है उसे आगे मत दोहराओ। ये आज तुम्हें सबक़ मिला है सीखने सिखाने में कुछ ग़लतियाँ तो होती ही हैं। ज़िंदगी की ठोकरें भी हमें कुछ सीखा कर जाती हैं। तुमने जापानी प्रोवर्ब तो सुनी है 'फॉल डाउन सेवन गेट अप एट' बेशक आप सात बार गिरो लेकिन आठवीं बार उठ खड़े हो जाओ। गाड़ी ठीक हो जाएगी पर इस तरह नेगेटिव सोचोगी तो आगे किसी भी काम के लिए कदम नहीं बढ़ा पाओगी।

इस तरह डैडी ने मेरा हौसला बढ़ाया और मैंने बाद में बिना गलती किए चार पाँच दिन में कार चलानी सीख ली।आज डैडी तो हमारे बीच नहीं हैं लेकिन किसी भी मुश्किल समय में उनकी ये बातें हिम्मत बंधाती हैं।

राजकुमार कुम्भज की दो कविताएं

क्यों होता है ?

क्यों होता है
क्यों होता है हमारे ही देश में
क्यों होता है ये सब अंततः
कि कोई एक ए.डी.एम.
गंगा नदी में पेशाब करता है
कि कोई एक लंपट
दरोगा की बीबी से बलात्कार करता है
कि कोई एक शिक्षाविद्
महान यौन-अपराधी हो जाता है
मैं जानना चाहता हूं
और अंततः सच की अनंत ऊंचाई
अनंत ऊंचाई तक पहुंचकर
मैं जानना चाहता हूं
कि अंततः गंगा एक नदी ही तो है
उसकी पवित्रता बचाएगा कौन ?
मैं जानना चाहता हूं
कि अंततः दरोगा की बीबी भी एक स्त्री ही तो है
उसकी पवित्रता बचाएगा कौन ?
मैं जानना चाहता हूं
कि अंततः एक शिक्षा विद्भी एक मर्द ही तो है
उसकी मर्द-मानसिकता से बचाएगा कौन ?
हमें पता होना चाहिए
कि ठहर गया है जल
और कि ठहरगए जल पर जम जाती है काई
काई को शैवाल भी कहते हैं
कई-कई हैं हमारे पथ-प्रदर्शक
और ऐसे-ऐसे भी
कि जो पहनकर शैवाल
शैवाल के पीछे रहते हैं
क्यों होता है हमारे ही देश में ये सब
ये सब इस देश में अंततः क्यों
क्यों होता है ?

एक और दृश्य

एक और दृश्य
हत्या से पहले नृत्य
और नृत्य से पहले हत्या की कार्रवाई
आख़िर यही तो नहीं हो रहा है कहीं इन दिनों
हमारीअपनी ही सांस्कृतिक-संस्थाओं में
क्या कुछ अलग
क्या कुछ अलग
हत्या से पहले या हत्या के बाद?
मुझे सूझता ही नहीं है वह नृत्य
जो बुझता हीन हीं है वह हत्या
मैं नहीं कभी भी किसी भी हत्या के पक्ष में
मैं नहीं कभी भी किसी भी ऐसे ही नृत्य के पक्ष में
जो नृत्य हत्या के पक्ष में
हत्या मेरी ही नहीं, हो ही सकती है किसी की भी
कोई भी हत्या, विषय नहीं हो सकता है नृत्य
नृत्य नहीं है विषय
विषय है कविता में कविता का
तो सिर्फ है हत्या ही
किसने किया, किसने सुना , किसने भूला
ज़रूरी नहीं है इस संदर्भ की तमाम बहस
पकड़ो उसे,
वह जो भाग रहा है बदल-बदल कर भेष
पकड़ो उसे,
वह जो भाग रहा है बदल-बदल कर भाषा
पकड़ो उसे,
वह जो भाग रहा है बदल-बदल कर भूषा
या तो आप देख नहीं पार हे हैं उसे
याकि फिर चुंधियां गई हैं आँखें आपकी
याकि हो गई है हत्याएं सहने की आदत
आख़िर यही तो नहीं हो रहा है कहीं इन दिनों
हमारी अपनी ही सांस्कृतिक-संस्थाओं में
नृत्य से पहले हत्या की कार्रवाई
और हत्या से पहले नृत्य
जैसे हमारी भाषाई-संसद का ही कोई
एक और दृश्य।

वक्रोक्ति

डॉ. सुरेश कुमार मिश्रा उरतृप्त
लेखक व्यंग्यकार हैं।

साहित्यिक संघर्ष की झूठी खुशी

एक दिन दोपहर में एक छोटी सी साहित्यिक चाय पार्टी बुलाई गई। जहाँ शहर के चार नामी लेखकों को बुलाया गया। सभी के चेहरे पर वही गंभीरता थी, जो अकसर साहित्य की ऊँचाईयों को छूने की कोशिश में नाकाम रही हो। माहौल में गहरा विमर्श चलने लगा था। चारों एक-एक कर अपनी अपनी 'सफलता' की कहानियाँ सुनाने लगे।

पहला लेखक, जिसे खुद पर गहरी श्रद्धा थी, बोला, 'भाइयो, मेरे नए उपन्यास का तीसरा संस्करण भी मार्केट में आ गया है। सिर्फ बीस दिनों में। पाठकों का इतना प्यार मिला है कि बस मन अभिभूत हो गया। साहित्य के प्रति रुझान बढ़ रहा है।'

दूसरा लेखक उसकी इस गप्प पर सर हिलाते हुए बोला, 'अरे वाह! इतनी जल्दी तीसरा संस्करण! आजकल का पाठक समझदार हो गया है। वो वहीं किताब चुनता है, जो गहरी हो, मर्म तक पहुंचे।'

तीसरा लेखक, जो थोड़ा संयमित था, अपने चश्मे को ठीक करते हुए मुस्कुराया और बोला, 'साहित्य का स्तर सचमुच उठ रहा है। पाठक सच में विशिष्टता की ओर बढ़ रहे हैं। हमारी किताबें ही उन्हें सही राह दिखाती हैं। ख़ैर, मेरा भी चौथा संस्करण आ गया है। ये तो मानो साहित्यिक क्रांति हो रही है!'

तीनों लेखक हँसते हुए चाय की चुस्की लेते रहे, जबकि चौथा लेखक चुप बैठा रहा। उसकी ख़ामोशी से उनके मन में उत्सुकता जगी।

'और भाई साहब! आपकी किताब का क्या हाल?' पहले लेखक ने पूछा।

चौथा लेखक मुस्कुराते हुए बोला, 'क्या बताऊँ मित्रों, अभी किताब तो आई नहीं। सोच रहा हूँ, पहले एकदम 'फेमस' बन जाऊँ। फिर सीधे 'अगले साल' का संस्करण निकालूँगा, कुछ तो अलग हो। जल्दी क्या है!'

तीनों लेखक उसकी बात पर हंस पड़े। पहले लेखक बोला, 'मित्र, ये पब्लिक बड़े समझदार होते हैं। वो हर साल नया संस्करण माँगते हैं।' दूसरा लेखक समर्थन में बोला, 'हमारा काम है लिखना, फिर चाहे तीसरा संस्करण हो या चौथा। पब्लिक को केवल अच्छा कंटेंट चाहिए।'

चौथे लेखक ने एक गहरी साँस लेते हुए

व्यंग्यात्मक मुस्कान बिखेरी, 'सही कहा भाई, पर मुझे तो 'सबसे' अच्छा संस्करण निकालना है। एक ऐसा, जो अपने आप में पूर्ण हो।'

तीसरे लेखक ने अब गहरी बात छेड़ी, 'संस्करण क्या है मित्रों, सिर्फ छपाई है। असली साहित्य तो उन पन्नों के बीच है जो पाठक को प्रभावित करें।'

अब तक विमर्श ने गहरी जड़ें पकड़ ली थीं। हर शब्द में छिपा हुआ गुमान, और साथ ही, अपने महत्व की एक भारी डोज़, जैसे हर बात का जवाब भी उन्हीं के पास हो। तभी चौथे लेखक ने धीरे से कहा, 'साहित्य महान है, और महान ही रहेगा। संस्करण कितने भी हों, असली सफलता तो उस पाठक की मुस्कान में है जो हर पंक्ति को समझता है।' बाकी तीनों लेखक यह सुनकर हैरान रह गए।

कविता

अस्तित्व

अनुपमा अनुश्री, भोपाल

मेरी ही जमीं ,मेरा आकाश
हर दिन सूर्य मुझ में उगता है
सुनहरी किरणें बिखेर
मुझ में डूबता है
पंछियों के कलरव -करतब
मुझ में ही बसते हैं
कोलाहल करते हैं ।

यह हिमशिखर अटल
कभी मुझ में जमें
कभी पिघले रहते हैं
अक्सर कहते हैं
वह पल भी नहीं ठहरा
नहीं ठहरेगा यह भी पल ।

प्रकृतिस्थ होती हूँ
जब प्रकृति के बीच
यह मुझ में गुनगुनाती है
गीत गाती है, मुझ में ही
संपूर्ण खिल जाती है
नवसृजन की गाथाएँ रच जाती है।

मानवता के दुख सुख
मुझ में रिसते हैं ,खुशियाँ भी
यहीं रक्स करती हैं
अनुभूतियों की क़लम थामें
मेरी नित नूतन रचना
सुख -दुख को
परिभाषित करती है ।

श्वेत रश्मियों की चादरों पर
लिखती जो मृदुल आखर
यह दूधिया रजत चाँदनी
मुझ में ही भरी और खिली है
मेरे साथ ही चढ़ी उतरी है ।

पूर्णत्व से प्रगट
पूर्णत्व में समाहित
सृष्टि के पुरातन
नव रूपों से झाँकता
मेरा अभिन्न अस्तित्व
कहीं भी अधूरा,अपूर्ण नहीं है।

सुबह सवेरे मीडिया एल. एल. पी. के लिए उमेश त्रिवेदी द्वारा पी. जी. इंफ्रास्ट्रक्चर एण्ड सर्विसेस प्रा.लि., राउखेड़ी, देवासरोड, इंदौर से मुद्रित एवं 662, साईंकृपा कॉलोनी, बॉम्बे हॉस्पिटल के सामने, इंदौर से प्रकाशित।

प्रधान संपादक-उमेश त्रिवेदी
संपादक(म.प्र.)-गिरीश उपाध्याय
वरिष्ठ संपादक-अजय बोकिल
स्थानीय संपादक-हेमंत पाल
प्रबंध संपादक-अरुण पटेल

(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र इंदौर रहेगा)
RNINo.MPHIN/2015/66040,
MobileNo.:09893032101
Email-subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

कला

पंकज तिवारी

कला समीक्षक

बार्बिजाँ कलाकारों में थियोदोर रूसो और शार्ल दोबिन्यी

पेरिस के परिदृश्य पर लगातार काम करते रहने वाले कलाकार दोबिन्यी कई बार अपने चित्रों को सैलून में प्रदर्शित कर पाने में असफल रहे पर प्रकृति और बार्बिजाँ को लेकर उनके मन में प्रेम कम नहीं हुआ हालांकि परिवार चलाने हेतु एचिंग, वुडकटिंग, प्रिंटमेकिंग, लिथोग्राफी भी करनी पड़ी, बाद में इन माध्यमों के काम भी काफी प्रसिद्ध हुए। आप इस बीच भी लगातार सक्रिय रहे। बाद में आप की कृतियाँ कई वर्षों तक निरंतर सैलून में प्रदर्शित हुई। फ्रांसीसी सरकार द्वारा लीजन ऑफ ऑनर के अधिकारी के रूप में भी आपको नामित किया गया था। कलाकार थियोडोर रूसो, जूल्स डुप्रे, क्लोद मोने, पॉल सेजान, पॉल देलारोस और ग्युस्ताब कुर्बे जैसों से परिचित होने के बाद आपके कृतियों में समय-समय पर और भी परिवर्तन देखने को मिले। जिनेवा में भी आपके स्केचिंग की बात है। स्टूडियो के जैसे बनायी गयी नाव बार्ज ले बोटिन खरीदने के बाद आप उसमें यात्रा के दौरान भी कृतियों के सृजन में लगे रहे फलतः सीन, ओइस नदी और उनके किनारे के स्थान आपके पसंदीदा कला स्थान बन गये, पेंसिल से बना चित्र 'द बोटिन' जिस पर बैठकर ये कृतियाँ बनाते थे बहुत ही स्ट्रोकफुल बन पड़ा है। नाव के और भी कई चित्र बड़े ही सुन्दर हैं।

प्रकृति का सानिध्य सभी को भाता है और सभी अपने-अपने विधा में, किसी न किसी रूप में प्रकृति का प्रयोग करते हैं, प्रकृति की अनुकृति करते हैं। कला भी हमेशा से प्रकृति के इर्द-गिर्द ही घूमती रही है हाँ कभी-कभी कुछ विशेष वाद के कारण कुछ कलाकार प्रकृति से दूर, कुछ इतर करने का प्रयास भी करते हैं, पर जिस प्रकार बिना भोजन जीवन मुश्किल है ठीक वैसे ही प्रकृति बिना कई काम मुश्किल है। कला के साथ भी कुछ ऐसा ही है। प्रत्यक्ष न सही अमूर्त या आधुनिक रूप में ही सही पर प्रकृति का होना अनिवार्य सा है लगभग हर कृतियों में। ऐसा कोई भी मूल नहीं है जिसका प्रयोग कृतियों में किया जाय और वो प्रकृति में ना हो। कुछ कलाकार तो ऐसे भी हुए जो प्रकृति को मानवीय भावनाओं की भांति गहराई तक उतर कर नाजुक और संवेदनशील अवस्था में उनका अंकन करते हैं, निर्जीव में भी सजीवता, जीवटता प्रदर्शित होने लगती है। कृतियों को देखकर दर्शक भावविभोर हुए बिना नहीं रह सकते। कलाकार शार्ल दोबिन्यी ऐसे ही कलाकारों में थे जो नाव पर यात्रा करके कृतियों का निर्माण किया करते थे, जिन्हें जंगलों से ज्यादा नदियों के किनारों ने आकर्षित किया, जिनके कृतियों में खेत झोपड़ियाँ गायें, बत्तख, हरे-भरे जंगल और इस परिवेश में अपने कार्य में लीन लोग हैं।

बार्बिजाँ गाँव जो फाँतेनब्लो वन के सीमा पर बसा हुआ था, कुछ कलाकारों को वहाँ का दृश्य इतना पसंद आया कि वहीं के होकर रह गये और चित्रकारी में रमे रहें। दोबिन्यी भी ऐसे ही कलाकारों में से थे।

चित्रकारी परिवेश में पले बढ़े कलाकार शार्ल दोबिन्यी बार्बिजाँ कलाकारों में सबसे अधिक प्रसिद्धि प्राप्त करने में सफल रहे, इनका जन्म पेरिस में 15 फरवरी, 1817 में हुआ था। पिता, चाचा और चाची के कलाकार होने का असर इनके कलाकार जीवन पर भी पड़ा शुरुआती कला यात्रा पारंपरिक शैली में रही पर जल्दी ही बाहर की यात्रा और बार्बिजाँ में बसने के चलते उनके कला में परिवर्तन देखने को मिला और वे प्रकृति के दुलारे एवं संवेदनशील कलाकार बन गये।

पेरिस के परिदृश्य पर लगातार काम करते रहने वाले कलाकार दोबिन्यी कई बार अपने चित्रों को सैलून में प्रदर्शित कर पाने में असफल रहे पर प्रकृति और बार्बिजाँ को लेकर उनके मन में प्रेम कम नहीं हुआ हालांकि परिवार चलाने हेतु एचिंग, वुडकटिंग, प्रिंटमेकिंग, लिथोग्राफी भी करनी पड़ी, बाद में इन माध्यमों के काम भी काफी प्रसिद्ध हुए। आप इस बीच भी लगातार सक्रिय रहे। बाद में आप की कृतियाँ कई वर्षों तक निरंतर सैलून में प्रदर्शित हुई। फ्रांसीसी सरकार द्वारा लीजन ऑफ ऑनर के अधिकारी के रूप में भी आपको नामित किया गया था। कलाकार थियोडोर रूसो, जूल्स डुप्रे, क्लोद मोने, पॉल सेजान, पॉल देलारोस और ग्युस्ताब कुर्बे जैसों से परिचित होने के बाद आपके कृतियों में समय-समय पर और भी परिवर्तन देखने को मिले। जिनेवा में भी आपके स्केचिंग की बात है। स्टूडियो के जैसे बनायी गयी नाव

बार्ज ले बोटिन खरीदने के बाद आप उसमें यात्रा के दौरान भी कृतियों के सृजन में लगे रहे फलतः सीन, ओइस नदी और उनके किनारे के स्थान आपके पसंदीदा कला स्थान बन गये, पेंसिल से बना चित्र 'द बोटिन' जिस पर बैठकर ये कृतियाँ बनाते थे बहुत ही स्ट्रोकफुल बन पड़ा है। नाव के और भी कई चित्र बड़े ही सुन्दर हैं।

1866 तथा 67 में सैलून जूरी के सदस्य के रूप में दोबिन्यी युवाओं को आगे लाने हेतु सक्रिय भूमिका में रहें। कुछ समय तक इंग्लैंड के दौरे पर रहे दोबिन्यी 1870 में वहाँ चल रहे एक युद्ध के कारण वापस लौट आये। कैमिल कोरो से मित्रवत व्यवहार के साथ ही कलाशिक्षा की बात भी सामने आती है।

इनके कृतियों में चमकदार रोशनी से नहाई सुबह है और उसी सुबह में रंगों से भीगे नदी में नहाते बत्तख हैं, दोपहर की तपिश है, अलसाई अवस्था में शाम है, फैलता, छितराता आसमान है जो अपने में समेट लेना चाहता है पूरा सूर्य। सूर्योदय और सूर्यास्त के बीच का बदलता सुनहरा रंग है जहाँ चमक और सूप्त का अंतर स्पष्ट है, जहाँ प्रकृति को महसूसते हुए अंकित करने का प्रयास है, जहाँ प्रकृति के हर रंग को देखा जा सकता है, महसूस किया जा सकता है। द फार्म, कैनवास पर तैल, स्टूडियो आन द बोट, एचिंग, पुल विथ डीयर, एचिंग जैसी कृतियों के कलाकार, प्रकृति के संवेदनशील कलाकार दोबिन्यी 21 फरवरी 1878 को सदा के लिए इस देह को त्याग चले।

अक्सर कलाकारों का प्राचीन कला शैलियों से ठन जाता है फलतः कभी तो बहुत कुछ नया मिल जाता है पर कभी-कभी खो जाने का डर भी बना रहता है। नवशास्त्रीयतावादी, रोमांसवादी, यथार्थवादी एक दूसरे पर नुक्ताचीनी में व्यस्त थे उधर बार्बिजाँ गाँव जो फाँतेनब्लो वन के सीमा पर बसा हुआ था, में कुछ कलाकार प्रकृति के सान्निध्य में, जो शायद पहली दफा हो रहा था, चित्रकारी में रमे हुए थे। जिनके विषय हरे-भरे जंगल, खेत झोपड़ियाँ, गायें, बत्तख और खेती में मशगूल किसान थे। रूसो तथा दोबिन्यी बार्बिजाँ के प्रमुख कलाकारों में थे। इनकी कलाकृतियाँ यथार्थवादी थीं पर प्रकृति आदर्श रूप में न होकर नैसर्गिकता लिए हुए थी, प्रकृति की आंतरिक सुंदरता ही बार्बिजाँ कलाकृतियों की थाती है। जैसा कि आम है विरोध भी हुआ, गँवार तक का तमगा मिला, पर हुआ वही जो यहाँ के कलाकारों का समूह चाहता था। धीरे-धीरे इन सभी की कलाकृतियाँ चयनित भी होने लगीं और पुरस्कृत भी हुईं। प्रकृति को मुख्य विषय के रूप में वो भी सामने बैठ कर बिना किसी कृतिम प्रभाव के बनाना बार्बिजाँ कलाकारों की उपलब्धि है। शांति, सुकून नैसर्गिक सौंदर्य के तलाश में कुछ कलाकारों का बार्बिजाँ गाँव आना हुआ, कुछ कलाकार यहीं के हो गये तो कुछ समय-समय पर कृतियों के निर्मिती हेतु यहां आते रहे। बार्बिजां गांव होने के कारण यहाँ आकर समूह में कार्य करने वाले उस समय के लगभग सभी कलाकारों को बार्बिजाँ कलाकार कहा गया। कुछ कलाकार प्रकृति को फलक पर इतने गहराई के साथ अंकित किये हैं कि चकित हुए बिना नहीं रहा जा सकता, कलाकार थियोदोर रूसो ऐसे ही कलाकारों में थे जो प्रकृति को महसूसते हुए अपनी तूलिका चलाते थे। निर्जीवता में भी सजीवता के दर्शन किया करते थे कलाकार रूसो। छाया-प्रकाश पर विशेष प्रकाश तो नहीं था पर प्रकृति पर इतना बारीक अध्ययन कि कृति बोल उठे कि अभी हवा चलेगी और पत्ते आ गिरेंगे हमारे हाथों पर?। 15 अप्रैल 1812 में पेरिस में जन्में कलाकार रूसो का दाखिला बोर्डिंग स्कूल में हो तो गया था, पर वो कला के हो चुके थे, समय-समय पर चाचा का सानिध्य मिलता रहा। रूसो शांत प्रवृत्ति के व्यक्ति थे, भावुक भी थे। यात्रा और यात्रा में स्केच करना उन्हें बेहद पसंद था।

युवावस्था आते-आते अचानक से रूसो कला की : दुनिया में एक लम्बी छलाँग लगाते हुए बहुत अच्छा करने लगे थे कुछ सालों तक इनके कृतियों का चयन भी अकादमियों में होता रहा पर अच्छा समय ज्यादा दिनों तक साथ न दे सका और कई ऐसी घटनाएं जो मन को खरोंच जाती हैं, रूसो के साथ घटीं। कृतियों को लेकर कई मौकों पर हताशा, पारिवारिक उलझन, तमाम नकारात्मक घटनाओं का असर उनके सेहत पर भी दिखा जो अंत तक बना रहा। कमरे में कम जगह होने के कारण बड़े कैनवास पर कार्य करना थोड़ा मुश्किल था पर मित्रों के सहयोग से बड़े कार्य भी संभव हो सके। अकादमियों से कई दफा निराश होने के बावजूद शुभचिंतकों द्वारा कृतियों का प्रर्दशन किया गया, कला समीक्षकों द्वारा कृतियों पर गहराई से चिंतन हुआ, लोग इनके कृतियों से रूबरू हुए, कृतियां पसंद की गई, परिणामतः अकादमी में इनके कृतियों का चयन पुनः शुरू हुआ बाद में आप जूरी अध्यक्ष भी बने पर पूर्व में घटित घटनाओं ने आपको अंदर तक व्यथित कर रखा था जिससे उबर पाना मुश्किल था। उत्तरोत्तर खुशियों पर पूर्व का ग़म हावी रहा जो कभी-कभी कृतियों में नज़र भी आ जाता था।

'स्टडी ऑफ ट्री ट्रंक्स' कैनवास पर तैल, कृति में घासें जीवंत हो उठी हैं, तने पर का छिलका-छिलका बोलने को आतुर हो जैसे। तने जो कट कर भूमि पर पड़े हैं अपनी वेदना भी व्यक्त करते हुए से हैं जो कहीं न कहीं रूसो के ग़म को भी दर्शाते हैं। पीछे पड़ा तना दर्द से कराहता हुआ प्रतीत हो रहा है। बारीक से बारीक रेशे भी स्पष्ट नजर आ रहे हैं रंग एकदम से नैसर्गिक जान पड़े हैं, कल्पना का रंचमात्र भी प्रयोग नहीं है। कृति कलाकार के संवेदनशीलता को बखूबी बयां कर रही है। वहीं दूसरी कृति जहां आंधी-तूफान का अंकन है, भी जीवंत बन पड़ी है पर इस कृति में कृत्रिमता नहीं है ऐसा स्पष्ट नहीं कहा जा सकता।

❐ यूके से प्रज्ञा मिश्रा

सपनों से भरी वो नीली आंखों का जादू

ऑस्कर अवॉर्ड के दावेदारों की लिस्ट में 'लापता लेडीज' लापता है और इस बात की भविष्यवाणी हर उस फिल्म प्रेमी ने कर दी थी, जिसने किरण राव की 'लापता लेडीज' और पायल कपाड़िया की 'ऑल वी इमेजिन एज लाइट' देखी है। पायल की फिल्म मई से ही उम्मीद जगाए थी कि इस बार दुनिया को दिखा देगी, लेकिन ऑस्कर की हलचल में फिल्म है, जो चुपचाप जगह बनाती रही और अब अवार्ड की शार्ट लिस्ट में शामिल है।

फिल्म है **'संतोष'** और यूके की तरफ से ऑस्कर के लिए दावेदारी कर रही है। फिल्म डायरेक्टर संध्या सूरी की यह पहली फीचर फिल्म है। इससे पहले डाक्यूमेंट्री फिल्में बनाती रही हैं। फिल्म में 'संतोष' (शहाना गोस्वामी) पुलिस की नौकरी करने लगती है, क्योंकि पति अब नहीं है। न तो मां-बाप के घर जा सकती है और न ही ससुराल, ऐसे में पति की जगह नौकरी शुरू कर दे।

इसी के साथ शुरू होता है मुश्किलों का सफर, जहां न सिर्फ नई नौकरी और नए लोगों से तालमेल बिठाना है, बल्कि समाज को भी नजदीक से देखना है, जहां पिछड़ी जाति की लड़की के मरने का दुःख कम है, लेकिन उसकी लाश से कुएं का पानी खराब हो जाने की चिंता ज्यादा है। **'संतोष'** के सामने कई मुद्दे हैं, जहां नैतिकता पर सवाल हैं। पुलिस की क्रूरता नजदीक से दिखाई देती है। महिलाओं और पिछड़ी जाति के लोगों से भेदभाव और शोषण ऐसा चक्रव्यूह है, जहां से बाहर निकलना नामुमकिन है। यही नौकरी भी है, जिसकी वजह से संतोष को कुछ महत्व मिला है, उसकी अपनी जिंदगी की शुरुआत हुई है। संतोष को जो आजादी और जिम्मेदारी मिली है, उसकी वजह से जिंदगी की गाड़ी पटरी पर आ गई है। संतोष के किरदार में शहाना इतनी बेहतरीन है कि संतोष ही लगने लगती है।

संतोष, जिसे चुप रह कर दूर से देखना अच्छा लगता है, संतोष जो पुलिस महकमे में काम करने वालों को देखती है तो खुद को उनसे अलग देखती है, जैसे इन लोगों की आदतों से खुद को बचाना चाहती हो, लेकिन जिस तरह इस पुलिस की वर्दी का फायदा मिलता है तो उस फायदे को उठाने में झिझकती भी नहीं है।

इस फिल्म का हासिल है संतोष और इंस्पेक्टर शर्मा (सुनीता राजवार) का रिश्ता। तनाव से शुरू होकर इस रिश्ते में कई उतार-चढ़ाव आते हैं और डायरेक्टर ने इस पेशे में मौजूद मुश्किलों को इन दो किरदारों के जरिए परदे पर बड़ी खूबसूरती से दिखाया है। यहां फिल्म का मुख्य किरदार उस पेशे में है, जहां मर्दों का राज चलता है, लेकिन फिर भी खुद को बचाए रखने की कोशिश में जुटी है। समाज की उस कमजोरी को सामने रखने में संतोष कामयाब है, जहां यह मान लिया है कि न्याय मिलना मुश्किल है।

कॉन फिल्म फेस्टिवल में झंडे गाड़ने के बाद फिल्म ऑस्कर की शार्ट लिस्ट है और इस लंबे सफर का नया पड़ाव तो तीन मार्च को ही पता चलेगा, इस दौरान भारत की महिला फिल्मकारों ने यह साबित कर दिया है कि किसी से कम नहीं हैं।

वेब सीरीज समीक्षा

आदित्य दुबे

(लेखक वेबसाइट ई-अंतर्भव में प्रबंध निदेशक है)

बंदिश बैंडिट्स 2 : संगीत घराने की तथाकथा

आनन्द तिवारी का निर्देशन बढ़िया है। ऐसी सिरीज़ बनाना आसान नहीं होता है। यह रिस्की जॉनर है जहाँ कहानी और म्यूजिक साथ साथ चलना है। एक भी ढीला पड़ा तो मज़ा किरकिरा हो सकता है। सिरीज़ पर आनन्द की पकड़ जबरदस्त रही और वो दर्शकों को पूरा आनन्द दे गये। रंग और रंगों की दुनिया को इस माध्यम से प्रस्तुत करने में निर्देशक आनन्द तिवारी सिद्धहस्त हैं बंदिश बैंडिट्स में भी रंग की छटा को आनन्द ने बड़ी खूबसूरती के साथ प्रस्तुत किया था। उसके सीक्वल 'बंदिश बैंडिट्स टू' बनाने में भी आनन्द ने चार साल खपाये और उनकी मेहनत इस बार भी रंग लाई है। आनन्द मूलतः एक गीतकार हैं अतः उनकी हर फिल्म,हर वेबसिरीज़ में गीत -संगीत पक्ष बेहद मज़बूत होता है इसलिए उनकी फिल्म अथवा वेबसिरीज़ में गाने भी अच्छे होते हैं।

फिर वर्ष 2020 में आई दर्शकों के बीच काफी पसन्द की गई वेबसिरीज 'बंदिश बैंडिट्स' का सीजन टू इस सप्ताह प्राइम वीडियो पर स्ट्रीम हो रहा है। यह वेबसिरीज़ प्रस्तुतीकरण के लिहाज़ से थोड़ी अलग है। इस सिरीज़ में वो सब नहीं है जो कि आजकल हर दूसरी सिरीज़ में होता है। यह सिरीज़ कुछ अलग दिखाने की कोशिश करती है और कोशिश ही नहीं करती उसमें पूरी तरह से कामयाब भी होती है। यह सिरीज़ देखकर पता चलता है कि इसे बनाने में काफी मेहनत की गई है और अब इस सिरीज़ की सफलता दर्शकों के पाले में है कि वो प्राइम वीडियो पर जाकर इस मेहनत को कितनी सफल करते है।

आनन्द तिवारी का निर्देशन बढ़िया है ।ऐसी सिरीज़ बनाना आसान नहीं होता है। यह रिस्की जॉनर है जहाँ कहानी और म्यूजिक साथ साथ चलना है। एक भी ढीला पड़ा तो मज़ा किरकिरा हो सकता है। सिरीज़ पर आनन्द की पकड़ जबरदस्त रही और वो दर्शकों को पूरा आनन्द दे गये। रंग और रंगों की दुनिया को इस माध्यम से प्रस्तुत करने में निर्देशक आनन्द तिवारी सिद्धहस्त हैं बंदिश बैंडिट्स में भी रंग की छटा को आनन्द ने बड़ी खूबसूरती के साथ प्रस्तुत किया था। उसके सीक्वल 'बंदिश बैंडिट्स टू' बनाने में भी आनन्द ने चार साल खपाये और उनकी मेहनत इस बार भी रंग लाई है। आनन्द मूलतः एक गीतकार हैं अतः उनकी हर फिल्म,हर वेबसिरीज़ में गीत -संगीत पक्ष बेहद मज़बूत होता है इसलिए उनकी फिल्म अथवा वेबसिरीज़ में गाने भी अच्छे होते हैं।

यह वेबसिरीज़ तो संगीत पर ही केन्द्रित है । सिरीज़ को देखकर ही लगता है कि इस पर निर्देशक ने काफी मेहनत की है।

सिरीज़ की कहानी एक संगीत घराने की तथाकथा हैं। परिवार के मुखिया पण्डित राधेमोहन राठौड़ जो एक लब्धप्रतिष्ठित संगीतज्ञ हैं उनका अवसान हो जाता है। उनके संगीत को ज़िन्दा रखने का जिम्मा पोते राधे पर है लेकिन एक किताब में पण्डितजी के बारे में काफी कुछ उल्टा सीधा छप जाता है। यह किसने छपवाया इसका पता लगाने और घराने की साख बचाने और अपने दादा का नाम ज़िन्दा रखने के लिये राधे यत्न करता है। राधे को इस प्रयत्न में एक नई म्यूजिक सेंसेशन तमन्ना का साथ भी मिलता है। कुछ मोड़ और कुछ प्रसंग के जुड़ने से कहानी आगे बढ़ती है और स्मृतिशेष पण्डित राधामोहन राठौड़ का नाम रोशन रहता है।

सिरीज़ में राधे की भूमिका में ऋत्विक भौमिक का काम कमाल का है। वे इस भूमिका के साथ तादात्म्य बैठाने में बेहद सफल रहे हैं। अपने पारम्परिक संगीत घराने की प्रतिष्ठा के लिये उनके जेहन में जो जुनून है उसे ऋत्विक ने बखूबी पेश किया है । श्रेया चौधरी ने भी तमन्ना की भूमिका में अच्छा अभिनय किया है। उन्होंने एक्टिंग मैनेरिज़्म और म्यूजिक का अच्छा मिक्सअप पेश किया है। उनकी स्क्रीन प्रेजेंस भी काफी अच्छी है। राजेश तैलंग हमेशा की तरह शानदार हैं। एक

बार फिर वो आपको अपनी कमाल को एक्टिंग से इंप्रेस करते हैं। अतुल कुलकर्णी तो शायद कभी खराब एक्टिंग कर ही नहीं सकते। यहाँ भी वो शानदार काम कर गए। शीबा चड्ढा का काम काफी अच्छा है। बाकी के सारे एक्टर्स ने अपनी भूमिका के साथ पूरा इंसाफ किया है।

इस सिरीज़ में बड़ी मेहनत से कुछ नया करने की कोशिश की गई है। सेट शानदार हैं, भव्य प्रस्तुति है, म्यूजिक बढ़िया है, और गाने आने पर पर सिरीज़ को फॉरवर्ड नहीं करते, गाने एंजॉय करते हैं. इस सिरीज़ में आप देखना चाहते हैं कि अगले सीन में क्या होगा? कौन- कौनसी चाल चलेगा? अब कौनसा म्यूजिक पीस आएगा? इस सिरीज़ को देखकर लगता है कि इसे बनाने वालों ने मेहनत करने में कोई कसर नहीं छोड़ी और उनकी मेहनत नजर आती है और ऐसी सिरीज़ को उनके नएपन और मेहनत के लिए देखा जाना चाहिए। पहले सीजन में शंकर एहसान लॉय का म्यूजिक था। इस बार बहुत से लोगों ने अलग अलग गानों को बनाया है और म्यूजिक अच्छा बना है। आपको मजा आता है सुनकर, आप फॉरवर्ड नहीं करते। यह भी एक बड़ी उपलब्धि है ।

यदि आपने - 'बंदिश बैंडिस्ट टू' देखी है तो सीजन टू को भी देखना चाहिए। बिंज वॉच करने का असल मजा आयेगा, जो नहीं करते वो भी इस बार एक साथ पूरी सीरीज देखने की कोशिश करें, आनन्द आएगा। राग और बंदिश से भरे संगीत की शौकीन हैं तो इसे ज़रुर देखें। सिरीज़ में प्रेम पर भी जोर दिया गया है। इस सिरीज़ में प्रेम की अभिव्यक्ति पर एक वरिष्ठ समीक्षक ने कवि हेमंत देवलेकर की एक अर्थपूर्ण पंक्ति को उद्धृत किया है कि प्रेम में कोई कैसे असफल हो सकता है, प्रेम होना ही सफलता है। इस प्रेमपगी वेबसिरीज़ को प्रेम और आसक्ति के चहेतों को ज़रुर देखना चाहिए।

आप फूक नहीं पाया गृहमंत्री का पुतला

की इस्तीफे की मांग...

नर्मदापुरम। आम आदमी पार्टी नर्मदापुरम ने जिला अध्यक्ष राजेंद्र मालवीय के नेतृत्व में गृह मंत्री अमित शाह का पुतला दहन करने और इस्तीफे की मांग को लेकर आज आम आदमी पार्टी ने जबरदस्त नारेबाजी करते हुए मीनाक्षी चौक पर मोर्चा संभाला। जिला संयुक्त सचिव कासिम अली ने बताया कि

पिछले दिनों संसद भवन में देश के ग्रह मंत्री अमित शाह द्वारा भारत रत्न, संविधान निर्माता, बाबासाहब अंबेडकर जी के लिये आपत्तिजनक बयान दिया जिस से आम आदमी पार्टी अपने आदर्श के अपमान से आहत हुई है जिसके विरोध में आज नर्मदापुरम के कार्यकर्ताओं द्वारा शहर के मुख्य चौंक मीनाक्षी चौराह पर गृहमंत्री अमित शाह का पुतला दहन किया एवं विरोध प्रदर्शन किया और राष्ट्रपति के नाम ज्ञापन सौंप कर गृहमंत्री से इस्तीफे की मांग की इस विरोध प्रदर्शन में आरटीआई विंग जिला अध्यक्ष सीता सरन पांडे, जिला अध्यक्ष लीगल विंग एड. प्रदीप मालवीय जिला सोशल मीडिया प्रभारी सुनील कहार, जिला उपाध्यक्ष नानक राम पटेल, आर एन गुप्ता, जिला संयुक्त सचिव कासिम अली, धनी राम गौर, कमलेश कुमार गढ़वाल, सुमेर सिंह प्रजापति, पूरन लाल यादव, दीपक गोस्वामी, अमोद ठाकुर, सचिन ठाकुर, प्रेम मोर्या, अशोक लोखंडे, राजा विक्रम, दिलीप ठोके, रमेश वनोरिया, अभय राम दामड़े, आकाश चंद्रवंशी, बबलू प्रजापति, प्रदीप सायलवार, जीतू यादव, संजय जैन एड चक्रेश दूबे, देवेंद्र यादव, निक्की पटवा एवं अन्य साथी उपस्थित रहे।

मैराथन के लिये हिन्द फौज के रनर ग्राउण्ड पर बहा रहे पसीना

देवास। हिन्द फौज देवास रनिंग ग्रुप के रनर मैराथॅन की तैयारी के लिये पसीना बहा रहे है। हिन्द फौज कमांडर सीएसएम जितेन्द्र गोस्वामी ने बताया कि 2 फरवरी को इन्दौर में होने जा रही कॉल इण्डिया इन्दौर मैराथन जिसमें 3किमी, 5किमी, 10 किमी एवं 21 किमी में भाग लेने के लिये हिन्द फौज देवास रनिंग ग्रुप के 60 से ज्यादा रनर रोज सुबह 6 बजे ग्राउंड कुशाभाऊ ठाकरे स्टेडियम पर आकर खुब पसीना बहा रहें हैं और मैराथॅन की तैयारी कर रहें हैं। साथ ही आसपास के लोगों को

भी स्वास्थ्य के प्रति जागरूक कर रहें हैं। सभी रनर को ऐकडमी ऑफ इन्दौर मैराथन की तरफ से कॉल इण्डिया मैराथॅन की टी-शर्ट दी गई। इस अवसर पर हिन्द फौज रनर कुमेर सिंह वर्मा,चन्द्रशेखर तिवारी, मोना तिवारी, श्रीजा अग्रवाल, चन्द्रकान्त जगताप, खुशबू पागनिश, नालिनि कालेलकर, कृतिका निरखे, सुरेन्द्र शुक्ला, प्रद्युम्न राठोड़, अभिषेक लाठी, ताषिन शेख, अजय व्यास, गोपाल सिंह ठाकुर, सुभाष चावडा, दुर्गेश यादव आदि सभी रनरो को हिन्द फौज के पदाधिकारियों ने बधाई और शुभकामनाएं दी। इस दौरान सुरेश शर्मा, आजय दायमा, आरती दायमा, सीमा ललित द्विवेदी, गिरी विकास गिरी, अश्विन पागनिश, दीपिका बोरीवाल, सृजनिका लोखंडे, नीलू सक्सेना, पंकज जायसवाल, पुनित गिरी, अरुण शर्मा आदि उपस्थित थे।

राष्ट्रीय शालेय क्रीड़ा प्रतियोगिता में खिलाड़ी लगा रहे दम/सॉफ्ट टेनिस एवं ताइक्वांडो स्पर्धा के प्रारंभिक मैच शुरू

देवास। 68वीं राष्ट्रीय शालेय क्रीड़ा प्रतियोगिता के प्रारंभिक मुकाबले पायोनियर पब्लिक स्कूल मुखर्जी नगर एवं पुलिस लाइन टेनिस ग्राउंड पर खेले जा रहे हैं । प्रतियोगिता के संयोजक विश्वामित्र अवॉर्डी सुदेश सांगते ने बताया की इसमें 'सॉफ्ट टेनिस' 14 वर्ष,17 वर्ष एवं 19 वर्ष तथा 'ताइक्वांडो' 19 वर्ष से कम बालक बालिका की कुल 34 टीम के खिलाड़ी अपना शानदार प्रदर्शन कर रहे हैं। सॉफ्ट टेनिस स्पर्धा के परिणाम इस प्रकार रहे.. बालक 14 वर्ष समूह में महाराष्ट्र में सीबीएसई को दो जीरो से पराजित किया। पंजाब ने तमिलनाडु को दो एक से पराजित किया। गुजरात ने बिहार को दो एक से पराजित किया। मध्य प्रदेश ने आंध्र प्रदेश को दो जीरो से पराजित किया।

बालिका 14 वर्ष समूह में छत्तीसगढ़ में आंध्र प्रदेश को दो जीरो से पराजित किया। महाराष्ट्र ने विद्या भारती को दो जीरो से पराजित किया। बालक 17 वर्ष समूह में महाराष्ट्र ने जम्मू कश्मीर को दो एक से पराजित किया। छत्तीसगढ़ ने तमिलनाडु को दो एक से पराजित किया। पंजाब नेआंध्र प्रदेश को दो एक से पराजित किया। दिल्ली ने विद्या भारती को दो एक से पराजित किया। सॉफ्ट टेनिस के ऑफिशल्स हंसमुख वेगड़ागौरव कदम प्रीति पवार एवं मिथुन तिवारी थे। सॉफ्ट टेनिस के खिलाड़ियों से परिचय सॉफ्ट टेनिस के जिला अध्यक्ष महेश चौहान, मनीष जैन,पंकज सोनी,ने प्राप्त किया। इस अवसर पर मनीष जायसवाल, प्रवीण सांगते,महेश सोनी, विपुल चौहान, सुनील चौधरी, विजय वर्मा आदि उपस्थित थे।ताइक्वांडो स्पर्धा के वेट कैटेगरी के मुकाबले क्वार्टर फाइनल स्तर तक पहुंच गए हैं। केरल की कुमारी मनूषा एवं उत्तराखंड की रितिका बिष्ट क्वार्टर फाइनल पहुंच गई है। ताइक्वांडो के ऑफिशियल संदीप सिंह, पवन सैकिया, एवं नितिन जायसवाल थे।

प्रशासन का ध्यान नहीं देना उसकी मौन स्वीकृति..?

● **डूब क्षेत्र में हो रहा फिर अवैध मिट्टी भराव कार्य..**

नर्मदापुरम- संजीव डे राय

अवैध काम करने वालों ने एक बार फिर प्रशासन को चुनौती देते हुए मुख्यालय पर अपना सिर उठा लिया। मजेदार बात इसमें यह है कि प्रशासन की खामोशी उसमें उनकी मूक सहमति मानी जा रही.. मुख्यालय पर डूब क्षेत्र में एक बार फिर अवैध मिट्टी भराव का काम शुरू हो गया। जबकि नगर में मिट्टी भराव की कोई लिखित अनुमति तहसील से जारी नहीं हुई है। कलेक्टर नीरज सिंह के कार्यकाल में भोपाल तिराहा नमामि गार्डन के बाजू में ताबड़तोड़ हजारों डम्फर मिट्टी भराव किया जाने के बावजूद प्रशासन ने इस ओर ध्यान नहीं दिया था। लेकिन मध्य स्वदेश की खबर संज्ञान लेते हुए अनुविभागीय अधिकारी ने कलेक्टर के निर्देश पर मिट्टी भराव कार्य पर स्टे करते हुए तुरंत काम रुकवा दिया था लेकिन उसी जगह दो दिन से एक फिर मिट्टी भराई का काम शुरू हो गया। ऐसा ही मिट्टी भराव का काम ठीक इसके सामने सड़क के दूसरी ओर भी दस से बारह फुट मिट्टी का भराव किया जा चुका है। नमामि गार्डन के बाजू में मिट्टी भराव कार्य को स्टे करने के बाद जबकि प्रशासन को अवैध मिट्टी भराई

मामले को लेकर प्रकरण दर्ज करते हुए संबंधित रसूखदारों से जुर्माना वसूला जाना था और डूब क्षेत्र खाली करवाना था पर ऐसा कुछ नहीं हुआ, महसूस होता है जैसे प्रशासन ने जानबूझकर इस मामले को दिखावे के लिए स्टे कर डूब क्षेत्र में मिट्टी को बारिश पानी से सेट होने के लिए मौका दिया । अनुविभागीय अधिकारी श्रीमती नीता कोरी से इस मामले पर चर्चा करने पर उन्होंने मामले की जानकारी नहीं है कहा साथ ही नगर तहसीलदार से बात करने को कहते हुए मामले की जानकारी उन्हें देने को कहा और आश्वासन दिया है कि वे उक्त मामले को तुरंत दिखवा लेती है। नगर तहसीलदार श्री धुर्वे ने स्पष्ट मना किया है कि उनके कार्यालय से नगरीय क्षेत्र में मिट्टी भराव की कोई भी अनुमति जारी नहीं की गई साथ ही खनिज विभाग के साथ इस मामले की जांच करने का आश्वासन दिया है। मिट्टी भराव के इस मामले में एक सवाल और खड़ा होता है हजारों डम्फर मिट्टी का अवैध उत्खनन होने के बाद भी न तो उत्खनन वाले क्षेत्र से आर आई, पटवारी आवाज उठाते हैं न जहां मिट्टी भराई का काम किया जा रहा उस क्षेत्र का आर आई पटवारी कुछ कह पाता ऐसा क्यों..? गौरतलब होगा रसूलिया ग्राम के अंतर्गत आने वाले भोपाल तिराहा पर बरसाती पानी की निकासी पुलिया के लगकर नमामि गार्डन पहले ही अवैध मिट्टी भराव कर निचले क्षेत्र में पानी भराव का संकट बढ़ा चुका और अब उसके बाजू में लगभग दो एकड़ का रकबा जो डूब क्षेत्र में आता है का भराव कर निचले और इसके उपर के क्षेत्र में पानी भराव के खतरे को बढ़ा डाला। इस पर ध्यान देना जरूरी है।

बेअरलॉकर उद्योग की सकारात्मक पहल

सड़क सुरक्षा जागरुकता के लिए हेल्मेट और सीट बेल्ट लगाने वालों को बांटे उपहार

देवास/मोहन वर्मा। शहर के एक उद्योग बेअरलॉकर ने आज अपनी ट्रैफिक मित्रों की टीम के साथ मिलकर सड़क सुरक्षा जागरुकता के लिये अलग अलग स्थानों पर खड़े रहकर हेल्मेट और सीट बेल्ट लगाने वालों को सम्मानित कर उपहार दिए।

उल्लेखनीय बात ये है कि इस मुहिम में टीम के साथ कपंनी के इन्डिया ऑपरेशन हेड हितेश कंवर, एचआर हेड अभिनव जाधव,प्लांट हेड सौरभ सिंह चौहान,सुशांत खडताले तथा सीएसआर प्रबंधक प्रवीण शर्मा,सीएसआर सहयोगी एक्ट ईव फाउंडेशन अध्यक्ष मोहन वर्मा के साथ महिला कर्मचारी श्रेयांशी गुप्ता, गायत्री कुमावत,शुभा सुन्दरम उपस्थित रहे।

प्रोजेक्ट प्रमुख जीवन चौधरी ने बताया कि टीम के सदस्य आज विकास नगर चौराहे,सिविल लाईन चौराहे, उज्जैन रोड और मंडी स्थित पेट्रोल पंप पर पहुँचे और जिम्मेदार नागरिक के रूप में दोपहिया वाहन पर हेल्मेट और चौपहिया वाहन में सीट बेल्ट लगा कर चलने वालों को फूल,चाकलेट,की रिंग, पेन जैसे उपहार देकर सम्मानित किया। इसके साथ ही ट्रैफिक टी आई पवन कुमार को रात्रिकालीन ड्यूटी मे सहायतार्थ आठ मार्शल टार्च भी सोंपी। बेअरलॉकर की इस सकारात्मक पहल का लोगों ने स्वागत किया तथा स्वीकार किया कि सड़क सुरक्षा के लिए हेल्मेट और सीट बेल्ट को कानून के डर से नहीं बल्कि खुद व परिवार की सुरक्षा के लिए अनिवार्य रूप से लगाना चाहिए। अभियान में कपंनी के आतिश अग्रवाल, अमित नागजी,आनंद नामा,किशन सिंह कुशवाह, विकास पटेल सहित 22 से अधिक कर्मचारी भी टीम सदस्य के रूप में उपस्थित थे।

क्रिसमस ट्री में वंडर लैंड का कराया अनुभव

देवास । थॉम एकेडमी और उसकी सहयोगी संस्था, सेन थॉम पब्लिक स्कूल ने अपने परिसर में क्रिसमस के कार्यक्रम का भव्य आयोजन किया। इस कार्यक्रम ने सभी को उत्साहित कर दिया। इस अवसर पर परिसर को सुंदर सजावट, जगमगाते प्रकाश एवं विशाल क्रिसमस ट्री ने शीतकालीन वंडरलैंड का अनुभव कराया।

समारोह में छात्रों द्वारा विभिन्न प्रकार की मनमोहक प्रस्तुतियाँ दी गईं। कार्यक्रम में जीवंत नृत्यों, मधुर गीतों और दिल को छूलेने वाले कैरोल्स की एक श्रृंखला शामिल थी। सांता क्लॉज़ और स्वर्गदूतों के रूप में सजे छात्र - छात्राओं को देखकर संपूर्ण परिसर प्रसन्नता एवं उत्साह से भर गया।

इस महत्वपूर्ण कार्यक्रम में छात्रों द्वारा प्रस्तुत एक विचारशील नाटक था, जिसमें दया और करुणा के महत्व के बारे में एक सार्थक संदेश दिया। सेन थॉम पब्लिक स्कूल में भी अद्भुत नाटिका व झांकी आकर्षण का केंद्र रही। सेन थॉम एकेडमी में, एकेडमिक समन्वयक श्री जॉनसन थॉमस ने अपने संबोधन के माध्यम से सद्भावना और शांति के महत्व को बताया और सभी को क्रिसमस की सच्ची भावना को अपनाने के लिए प्रेरित किया, जबकि प्रेम और कृतज्ञता का संदेश सेन थॉम पब्लिक स्कूल की प्रधानाध्यापिका श्रीमती बीना नांबियार ने दिया। दिन का विशेष आकर्षण सांता क्लॉज़ थे जिन्होंने अपने जीवंत नृत्य और प्रसन्नता से सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया। कार्यक्रम का संचालन छात्रा आरती सिंह और यशिका राजपूत ने किया और धन्यवाद ज्ञापन छात्रा आराध्या गुप्ता ने किया।

धार के कलाकारों ने बांग्लादेश में हिन्दूओं पर अत्याचार के विरोध में कला के माध्यम से की अभिव्यक्ति

धार। संस्कार भारती मालवा प्रांत द्वारा इंदौर और उज्जैन संभाग के 8 से अधिक शहरों में लोक जागरण के उद्देश्य को लेकर बांग्लादेशी में हिंदुओं पर हो रहे अत्याचार के विरोध में धार शहर के कलाकारों ने शनिवार को लालबाग में लाईव पेंटिंग बनाई जिसमें लगभग 32 चित्रकार एकत्रित हुए। बांग्लादेश में हिन्दूओं पर घटित होने वाले अत्याचार पर चित्रकला के माध्यम से रंगों द्वारा अपनी भावनाओं को व्यक्त कर ÷मानवता ही सच्चा धर्म है÷ऐसी छवि तथा ''वसुदेव कुटुंबकम'' का संदेश चरितार्थ करते हुए जनजागरण का प्रयास किया।

इस आयोजन में सामान्य जन के अलावा कई वरिष्ठ समाजसेवियों द्वारा भी चित्रों का अवलोकन कर कलाकारों का उत्साहवर्धन किया गया। इस आयोजन में मुख्य कलाकार अतुल कालभवर, प्रेमसिंह सिकरवार, अशोक पाटीदार, हरिओम पाटीदार, संजय लाहोरी, नवनीत लोकरे, हरिश नायक, संदीप पाटीदार, संजय उपाध्याय, राधेश्याम दुबेला, अनूप श्रीवास्तव, पलक पाटीदार, ईशा जाट, हर्षित बडतिया, रितिका वैष्णव, श्रद्धा श्रीवास्तव, निकिता सिंघल, नित्या गोयल, सौनल अग्रवाल, सिया वैष्णोई, दिव्यांशी पवार, दिशा भंडारी, प्रथम मारू, प्रदीप जाट, राज तैजावत, हीरा सौलंकी, दिव्या भटोरे, पूजा बाचें, अंशिका हजारी, ऐशना लाहोरी द्वारा अपने बनाऐं गए चित्रों के माध्यम से विरोध व्यक्त किया गया। संस्कार भारती के मिडिया प्रभारी रॉकी मक्कड़ ने बताया कि इस आयोजन में धार एवं आसपास के कलाकारों द्वारा भी भाग लिया गया । जल्द ही सारे चित्रों की प्रदर्शनी लगाई जाएगी।

हजरत मौलाना कमालुद्दीन चिश्ती के सालाना 693वें उर्स में कव्वालों ने शानदार कलामों से अकीदतमंदों का दिल जीता

हिन्दू-मुस्लिम एकता का दिखा संगम, धार की शान शंभु प्रसाद पंवार व शमशेर सिंह यादव का सम्मान किया गया

धार। हजरत मौलाना कमालुद्दीन चिश्ती के सालाना 693 वें उर्स के मौके पर शुक्रवार की रात गुलजार रही। शहर सहित प्रदेश के अलग अलग हिस्सों से आए सभी धर्मों के श्रद्धलुओं ने बाबा के आस्ताने पर श्रद्धा भक्ति और अकीदत के फूल चढ़ाए वही देश दुनिया के मशहूर कव्वालों ने कव्वाली से महफिल में रंग जमा दिया।

देश के प्रसिद्ध कव्वाल रईस अनीस साबरी दिल्ली अजीम नाजा मुंबई नजीर नसीर वारसी कव्वाल हैदराबाद टिम्मू गुलफाम जयपुर ने बेहतरीन कलाम पेश कर अल सुबह तक महफिल खाने में रुकने को मजबूर कर दिया। धार उर्स में हिंदू मुस्लिम एकता का अनूठा संगम भी देखने को मिला है उर्स कमेटी धार ने शहर से जुड़ी दो प्रतिष्ठित हस्तियों का भव्य स्वागत ओर सम्मान किया है।

उर्स कमेटी के अध्यक्ष सुहेल निसार व उपाध्यक्ष शकील अहमद एडवोकेट ने बताया कि धार में जन्मे शंभु प्रसाद पंवार जो राजस्थान युनिवर्सिटी भीलवाडा संगीत कॉलेज में हेड ऑफ डिपार्टमेंट प्रिंसिपल रहे उन्होंने बीए तक शिक्षा भी धार ही से ली व एमए संगीत में पीएचडी खेरागढ़ यूनिवर्सिटी से गोल्ड मेडलिस्ट है व फिल्मी दुनिया मे भी संगीत दिया है वह दूरदर्शन के टॉप ग्रेड

आर्टिस्ट रहे हैं और राष्ट्रपति ज्ञानी जैल सिंह ने सम्मानित भी किया है।

वही खेल कूद के क्षेत्र में सेवाएं देने सहित कई पुरस्कार प्राप्त शमशेर सिंह यादव जिनका पूरा परिवार स्टेट टाईम से खेल कूद के क्षेत्र में सेवाए दे रहा है उनका भी उर्स कमेटी धार ने सम्मान किया है। वहीं शुक्रवार की रात कव्वालों के नाम रही देश के प्रसिद्ध कव्वाल रईस अनीस साबरी अजीम नाजा टिम्मू गुलफाम नजीर नसिर कव्वाल ने महफिल लूट ली। अजीम नाजा मुंबई ने नात नबी की याद आती है व गम का मारा हूँ बाबा कमाल कलाम पर दाद बटोरी वही टिम्मू गुलफाम जयपुर ने ऐसी सूरत तेरी कमली वाले कलाम पड़ा प्रसिद्ध कव्वाल रईस अनीस साबरी का बाबा कमाल पर पड़ा गया कलाम तेरा दीदार ख्वाजा निजाम के दिलबर ओर तोरी सूरत प्यारी ने सामईन को झूमने पर मजबूर कर दिया हैदराबाद से आए उस्ताद नजीर नसीर कव्वाल ने अली का जिक्र मुझे बा कमाल लगता है पड़ कर खूब नजराना पाया। इस दौरान अजमेर दरगाह के खादिम इरफान मोइन उस्मानी मुनीर अहमद शेख शकील बाबा इंदौर उर्स कमेटी सदर सुहेल निसार उपाध्यक्ष शकील अहमद इफ्तेखार उद्दीन शेख सचिव रफीउद्दीन सैयद जावेद अंजुम एडवोकेट सहित कमेटी के पदाधिकारी मौजूद रहे।

दुकानों को रखें व्यवस्थित, शेड्यूल एच-1 की दवाई पर रखें विशेष ध्यान : गोयल

केमिस्ट मिलन समारोह में जिलाध्यक्ष डॉ. अशोक शास्त्री को भेंट किया अभिनंदन पत्र

धार। सभी केमिस्ट साथी एक बात का विशेष ध्यान रखे। अपनी दवा दुकानों में बिल-बुक कम्पलिट रखे एवं व्यवस्थाओं का ध्यान रखे। विशेष रूप से साफ-सफाई एवं शेड्यूल एच-1 की दवाइयों के मामले में कोई कौताही ना बरते। जो भी नियम है उसका पालन करेंगे तो आपको किसी भी प्रकार की कोई परेशानी कभी भी नहीं होगी। यह बात ड्रग इंस्पेक्टर अशोक गोयल व श्री पाटीदार ने नगर केमिस्ट एसोसिएशन के केमिस्ट मिलन समारोह में बतौर मुख्य अतिथि कही। अध्यक्षता धार जिला केमिस्ट एसोसिएशन के जिला अध्यक्ष अशोक शास्त्री ने की। विशिष्ट अतिथि के रूप में धार जिला केमिस्ट एसोसिएशन के मुख्यसंरक्षक उमाशंकर सोनी, वरिष्ठ केमिस्ट राजेंद्र जैन, दीपक शर्मा, दिनेश अग्रवाल, अशोक अग्रवाल, अनिल पाटीदार सरदारपुर, बलबीर अरोड़ा अनिल पाटीदार, मौजूद थे। कार्यक्रम में जिलाध्यक्ष डॉ. अशोक शास्त्री का

उनके केमिस्टों के लिए किए गए योगदान पर अभिनंदन पत्र भेंट कर सम्मानित किया गया। वहीं जिला संगठन के पदाधिकारियों का सम्मान भी किया गया। मौजूद अतिथियों का स्वागत धार नगर केमिस्ट संगठन के अध्यक्ष विनीत खत्री ने किया।

संगठित होकर एकरूपता लाएं : शास्त्री

केमिस्ट संगठन जिलाध्यक्ष डॉ शास्त्री ने भी संबोधित किया। उन्होंने कहा कि केमिस्ट साथी संगठित होकर जिले में एकरूपता लाए एवं अपने समस्याओं को मुझे बताएं। इसी प्रकार की समस्या अगर हमारे केमिस्ट साथियों को आती है वह निश्चित उसका समाधान करवाएंगे। उक्त कार्यक्रम को धार जिला केमिस्ट एसोसिएशन के पदाधिकारी सर्वश्री मुख्य संरक्षक उमाशंकर सोनी, वरिष्ठ केमिस्ट राजेंद्र जैन, केमिस्ट साथी सर्वश्री वरिष्ठ केमिस्ट राजेंद्र जैन (राजू सेठ), अशोक अग्रवाल, दिनेश अग्रवाल, नागेंद्रपाल सिंह, नितिन कर्मेलकर, शैलेंद्र मित्तल पारावाला, निलेश जैन ने भी संबोधित किया । कुक्षी से आए जिला कार्यकारिणी सदस्य डॉ राकेश गुप्ता ने भी संबोधित किया। इस अवसर पर नगर केमिस्ट परिवार के प्रतिभावान बच्चो सर्वश्री मीना अंबर गुप्ता, एवहिश महेश अग्रवाल, जिज्ञांश राजेंद्र जैन, अपूर्व अंकुर बाँगर , डॉ. भास्कर अनिल पाटीदार का भी सम्मान किया गया। इस अवसर पर शहर के 100 केमिस्ट साथी उपस्थित थे। आभार धार नगर केमिस्ट संगठन के सचिव पंकज बोराना ने माना। इस दौरान नगर के केमिस्ट साथियों के साथ धार जिला केमिस्ट एसोसिएशन के पूर्व अध्यक्ष दिनेश अग्रवाल एवं उपाध्यक्ष अशोक अग्रवाल भी मौजूद थे। जानकारी धार नगर केमिस्ट एसोसिएशन के पीआरओ नितिन करमेलकर ने दी।

यशराज फिल्म्स की फिल्म 'मर्दानी' हिंदी सिनेमा की सबसे बड़ी महिला प्रधान फ्रेंचाइजी है, जिसने 10 साल से अधिक समय से दर्शकों के दिल में जगह बनाई है। इस ब्लॉकबस्टर फ्रेंचाइजी को लोगों का भरपूर प्यार मिला है और इसने सिने प्रेमियों के बीच एक दर्जा हासिल कर लिया। 'मर्दानी-2' की रिलीज सालगिरह पर, वाईआरएफ ने आधिकारिक तौर पर घोषणा की कि वे अब 'मर्दानी-3' बना रहे हैं, जिसमें रानी मुखर्जी एक बार फिर एक साहसी पुलिसकर्मी शिवानी शिवाजी रॉय का किरदार निभाएंगी।

अब आ रही है तीसरी 'मर्दानी'

भारतीय सिनेमा में रानी मुखर्जी एकमात्र ऐसी अभिनेत्री हैं, जिन्होंने मर्दानी में एकल अभिनय के रूप में ब्लॉकबस्टर फ्रेंचाइजी हासिल की! इस बारे में रानी मुखर्जी कहती हैं कि मुझे यह घोषणा करते हुए रोमांच हो रहा है कि हम अप्रैल 2025 में 'मर्दानी-3' की शूटिंग शुरू कर रहे हैं! पुलिस की वर्दी पहनना और ऐसा किरदार निभाना हमेशा खास होता है, जिसने मुझे बहुत प्यार दिया। मुझे उन सभी गुमनाम, बहादुर, आत्म-बलिदान करने वाले पुलिसकर्मियों को श्रद्धांजलि के रूप में 'मर्दानी-3' में एक बार फिर से इस साहसी पुलिस वाले का किरदार निभाने पर गर्व है, जो हमारी सुरक्षा के लिए हर पल परिश्रम करते हैं।

उन्होंने आगे कहा कि 'मर्दानी' एक बेहद पसंद की जाने वाली फ्रेंचाइजी है और लोगों की उम्मीदों पर खरा उतरने की हमारी एक निश्चित जिम्मेदारी है। हम इस पर खरा उतरने की पूरी कोशिश करेंगे। 'मर्दानी-3' डार्क, घातक और क्रूर है। इसलिए, मैं हमारी फिल्म के प्रति लोगों की प्रतिक्रिया जानने के लिए उत्सुक हूं। मुझे उम्मीद है कि वे इस फिल्म को भी उतना ही प्यार देंगे जितना उन्होंने हमेशा दिया है। इस फिल्म में

आदित्य चोपड़ा अपनी निर्देशन और लेखन टीम से दो प्रतिभाओं को रचनात्मक रूप से सहयोग करने और फ्रेंचाइजी की विरासत को आगे बढ़ाने के लिए सशक्त बनाते हुए दिखाई देंगे।

'द रेलवे मेन' फेम आयुष गुप्ता ने 'मर्दानी-3' की पटकथा लिखी है। आयुष ने इसके साथ एक और पटकथा और कहानीकार के रूप में स्ट्रीमिंग पर शुरुआत की और जबरदस्त सफलता देखी। श्रृंखला एक वैश्विक सफलता थी और अब तक की सर्वश्रेष्ठ श्रृंखला भी बन गई। भारत से श्रृंखला। उनके हृदय विदारक और कठोर धारदार लेखन की दुनिया भर में सराहना की गई।

'मर्दानी-3' का निर्देशन अभिराज मीनावाला करेंगे, जिन्हें वाईआरएफ ने तैयार भी किया। उनकी क्षमता को आदित्य चोपड़ा ने देखा, जिन्होंने सबसे पहले उन्हें बैंड बाजा बारात, गुंडे, सुल्तान, जब तक है जान, टाइगर 3 जैसी कुछ फिल्मों में सहायता करने के लिए सशक्त बनाया। अभिराज वर्तमान में 'वॉर 2' के एसोसिएट डायरेक्टर हैं और अब कंपनी उन पर ब्लॉकबस्टर मर्दानी फ्रेंचाइजी की बागडोर संभालने का भरोसा कर रही है। रानी ने खुलासा किया कि मर्दानी 3 पिछली फिल्मों की तुलना में एड्रेनालाईन रश को कई पायदान ऊपर ले जाएगी!

वे कहती हैं कि जब हम 'मर्दानी-3' बनाने के लिए तैयार हुए, तो हम उम्मीद कर रहे थे कि हमें एक ऐसी स्क्रिप्ट मिलेगी जो मर्दानी फ्रेंचाइजी फिल्म देखने के अनुभव को बेहतर बनाएगी। हमारे पास जो कुछ है उसे लेकर मैं वास्तव में उत्साहित हूं और मैं केवल यही उम्मीद कर रहा हूं कि सिनेमाघरों में 'मर्दानी-3' देखने के बाद दर्शकों को भी ऐसा ही महसूस हो!

रियल बॉक्स

मेरा नाम राजू घराना अनाम

हेमंत पाल

लेखक 'सुबह सवेरे' इंदौर के स्थानीय संपादक है।

भारतीय सिनेमा के सबसे बड़े फिल्ममेकर्स रहे राज कपूर ने सिर्फ हिंदी सिनेमा को ही समृद्ध नहीं किया, उन्होंने विश्व सिनेमा पर अपनी अमिट छाप छोड़ी। 'द ग्रेटेस्ट शोमैन' के नाम से मशहूर इस नीली आंखों वाले बहुमुखी कलाकार ने फिल्म मेकिंग, एक्टिंग और डायरेक्शन में ऐसा जबरदस्त कमाल किया, जो आज भी प्रेरणा देता है। राज कपूर का जन्म 14 दिसंबर 1924 को हुआ और 1988 में उनका निधन हो गया था। आज वे होते तो 100 साल के होते। 'मेरा नाम जोकर' में उन्होंने सच कहा था 'कल खेल में हम हो न हो गर्दिश में तारे रहेंगे सदा' और जाइएगा नहीं शो अभी खत्म नहीं हुआ। अब लगने लगा कि राज कपूर ने खेल खेल ही में ही, लेकिन सच ही कहा था कि शो अभी खत्म नहीं हुआ!

राज कपूर सिर्फ फिल्ममेकर नहीं दूरदर्शी थे। उन्होंने भारतीय सिनेमा की भावनात्मक परंपरा को आकार दिया। उनकी कहानियां केवल फिल्में नहीं, बल्कि भावनात्मक यात्राएं हैं, जो पीढ़ियों को जोड़ती हैं। यह उत्सव उनके नजरिए को हमारी छोटी सी श्रद्धांजलि है। उनके पोते रणबीर कपूर ने कहा कि हमें गर्व है, कि हम राज कपूर परिवार के सदस्य हैं। हमारी पीढ़ी एक ऐसे दिग्गज के कंधों पर खड़ी है, जिनकी फिल्मों ने अपने समय की भावनाओं को दर्शाया और दशकों तक आम आदमी को आवाज दी। उनकी टाइमलेस कहानियां प्रेरणा देती रहती हैं, और यह फेस्टिवल उस जादू का सम्मान करने और सभी को बड़े पर्दे पर उनकी विरासत का अनुभव करने के लिए आमंत्रित करने का हमारा एक तरीका है। निर्देशक, निर्माता और कलाकार के रूप में राज कपूर यथार्थ में एक महत्वपूर्ण व्यक्ति थे। उन्होंने हमेशा अपनी फिल्मों में सिक्के के दो पहलू दिखाए। एक पहलू आजादी के युग की आकांक्षाओं के दर्शन कराता है। दूसरा, हिंदी सिनेमा की वर्तमान स्थिति के सामने आईना रखने का काम करता है। सिद्धांत यही है 'दिल का हाल कहे दिलवाला सीधी सी बात न मिर्च मसाला।' उनका सिनेमा मांसल यौवन से लथपथ होने के बावजूद कथानक और घटनाक्रम के रूप में पूर्ण रूप से सात्विक था। यही था उनका बिना मिर्च मसाले वाला सिनेमा।

राज कपूर का जन्म पठानी हिन्दू परिवार में हुआ था। पांच भाइयों और एक बहन में सबसे बड़े राज कपूर ने अपनी शिक्षा सेंट जेवियर्स कॉलेजिएट स्कूल, कोलकाता और कर्नल ब्राउन कैंब्रिज स्कूल देहरादून से ली। बाद में 1930 के दशक में उन्होनें बॉम्बे टॉकीज़ में क्लैपर-बॉय और पृथ्वी थिएटर में एक अभिनेता के रूप में काम किया, ये दोनों कंपनियाँ उनके पिता पृथ्वीराज कपूर की थीं। राज कपूर बाल कलाकार के रूप में इंकलाब (1935) और हमारी बात (1943), गौरी (1943) में छोटी भूमिकाओं में कैमरे के सामने आ चुके थे। राज कपूर ने फ़िल्म वाल्मीकि (1946), नारद और अमरप्रेम (1948) में कृष्ण की भूमिका निभाई थी। इन तमाम गतिविधियों के बावजूद उनके दिल में एक आग सुलग रही थी कि वे स्वयं निर्माता-निर्देशक बनकर अपनी स्वतंत्र फ़िल्म का निर्माण करें। उनका सपना 24 साल की उम्र में फ़िल्म आग (1948) के साथ पूरा हुआ। उन्होंने प्रमुख भूमिका भी 'आग' में ही निभाई, जिसका निर्माण और निर्देशन भी उन्होंने स्वयं किया था।

इसके बाद राज कपूर के मन में अपना स्टूडियो बनाने का विचार आया और चेम्बूर में चार एकड़ ज़मीन लेकर 1950 में उन्होंने अपने आरके स्टूडियो की स्थापना की और 1951 में 'आवारा' में रूमानी नायक के रूप में ख्याति पाई। राज कपूर ने 'बरसात' (1949), 'श्री 420' (1955), 'जागते रहो' (1956) व 'मेरा नाम जोकर' (1970) जैसी सफल फ़िल्मों का निर्देशन व लेखन किया और उनमें अभिनय भी किया। उन्होंने ऐसी कई फ़िल्मों का निर्देशन किया, जिनमें उनके दो भाई शम्मी कपूर व शशि कपूर और तीन बेटे रणधीर, ऋषि व राजीव

अभिनय कर रहे थे। यद्यपि उन्होंने अपनी आरंभिक फ़िल्मों में रूमानी भूमिकाएँ निभाई, लेकिन उनका सर्वाधिक प्रसिद्ध चरित्र 'चार्ली चैपलिन' का ग़रीब, लेकिन ईमानदार 'आवारा' का प्रतिरूप है। उनका यौन बिंबों का प्रयोग अक्सर परंपरागत रूप से सख्त भारतीय फ़िल्म मानकों को चुनौती देता था।

मदभरे गीत संगीत और दिल को छूने वाली कहानियों के साथ अल्हड़ प्रेम प्रसंगों के चलते राज कपूर अपने समयकाल में बेहद लोकप्रिय हो गए थे। इस दौरान भारतीय फिल्म इतिहास की सबसे बड़ी स्टार और सबसे प्रशंसित अभिनेत्रियों में से एक नरगिस के साथ उनकी अक्सर ऑन-स्क्रीन जोड़ी भी बनी। राज कपूर फिल्मों में जितने गैर-रोमांटिक नजर आते थे, वास्तविक जीवन में उतने ही रोमांटिक थे। उनकी रूमानी तबीयत के कारण उनकी पत्नी कृष्णा राज कपूर के साथ नर्गिस, पद्मिनी और वैजयंती माला जैसी भारतीय नायिकाओं के संबंधों से काफी परेशान रहती थीं। इसके चलते वह कई बार उनका घर भी छोड़ देती थीं। 1950 के दशक के मध्य में अपनी प्रसिद्धि के चरम पर आवारा और 'श्री 420' की रिलीज़ के बाद राज कपूर न केवल भारत में बल्कि पूरे दक्षिण एशिया, अरब दुनिया, ईरान, तुर्की, अफ्रीका और सोवियत संघ में भी एक मशहूर हस्ती थे। साथ ही, उन्होंने अभिव्यक्तिवादी छाया और गहरे फ़ोकस के अपने उपयोग से हिंदी सिनेमा की शैलीगत शब्दावली का विस्तार करने में मदद की। बाद के सालों में रंग में काम करते हुए वे उन लोगों में से थे, जिन्होंने हिंदी फ़िल्मों में तेज़ी से लंबे, विस्तृत और शानदार गीत अनुक्रमों को शामिल करना शुरू किया।

राज कपूर की शुरुआती फिल्में लोकप्रिय संगीत और मेलोड्रामा के मिश्रण में गरीबी और जाति के बारे में जनजागरण लाने का प्रयास करती रही। श्री 420, जागते रहो, बूट पालिश से लेकर 'आवारा' और 'जिस देश में गंगा बहती है' इसके बेहतरीन उदाहरण है। जिनमें राज कपूर ने चार्ली चैपलिन का भारतीयकरण कर फिर भी दिल भी दिल है हिन्दुस्तानी की तर्ज में सफलतापूर्वक पेश किया। इन सबके चलते राज कपूर एक करिश्माई कलाकार और निर्माता-निर्देशक बन गए, जिन्होंने दुनियाभर में भारतीय फिल्मों का झंडा फहराने में कामयाबी पायी। उनके बाद की फिल्मों की चकाचौंध ने उन्हें हिन्दी फिल्मों के ग्रेटेस्ट शोमेन का दर्जा दिया, जो आज भी उनके नाम पर अखंडित ओहदा है।

उनकी काम करने की स्टाइल अनोखी थी। वे ऐसे काम करते थे, जिसकी कोई कल्पना नहीं कर सकता। मसलन 'जिस देश में गंगा बहती है' की कहानी सुनने के बाद शंकर जयकिशन ने यह कहा था कि बेहतर होगा वह इसका संगीत किसी दूसरे संगीतकार को दें, क्योंकि इसमें गानों की सिचुएशन ही नहीं है। इसी कथानक में राज कपूर ने सात दिन में ग्यारह गानों की सिचुएशन निकालकर सभी को अचंभित कर दिया। कहा जाता है कि वह अपनी फिल्मों के संगीत को दर्शकों से पास कराकर कथानक का हिस्सा बनाते थे। इसी तारतम्य में एक बात यह भी चर्चित है कि वे अपनी फिल्मों के गानों को पहले किन्नरों को बुलाकर सुनाते थे और उनकी सहमति के बाद उसे फिल्म में जोड़ते थे। उनकी फिल्मों में आजादी के बाद के भारत के आम आदमी के सपने, गांव और शहर के बीच का संघर्ष और भावनात्मक कहानियां जीवंत हो उठती थीं। आवारा, श्री 420, संगम, और 'मेरा नाम जोकर' जैसी फिल्में आज भी सिनेमा प्रेमियों के दिलों में बसी हुई हैं।

नई दिल्ली के रीगल सिनेमा से राजकपूर को खासा लगाव था। उनकी हर फिल्म का प्रीमियर यहीं होता था। वे पहले शो में मौजूद रहकर हवन करवाते थे। राजकपूर और नर्गिस ने रीगल के फैमिली बॉक्स में बैठकर कई फिल्में देखी थी। 1978 में जब बोल्ड दृश्यों के कारण कई सिनेमाघरों ने 'सत्यम शिवम सुंदरम' को प्रदर्शित करने से इंकार कर दिया, तब रीगल ने इसे बिना किसी झिझक के प्रदर्शित किया। ऋषि कपूर की बतौर नायक पहली फिल्म 'बॉबी' का प्रीमियर भी यहीं हुआ था। 30 मार्च 2017 को जब रीगल सिनेमा बंद हुआ, तब भी उसके अंतिम शो में 'मेरा नाम जोकर' का ही प्रदर्शन किया गया था।

- hemantpal60@gmail.com/ 9755499919

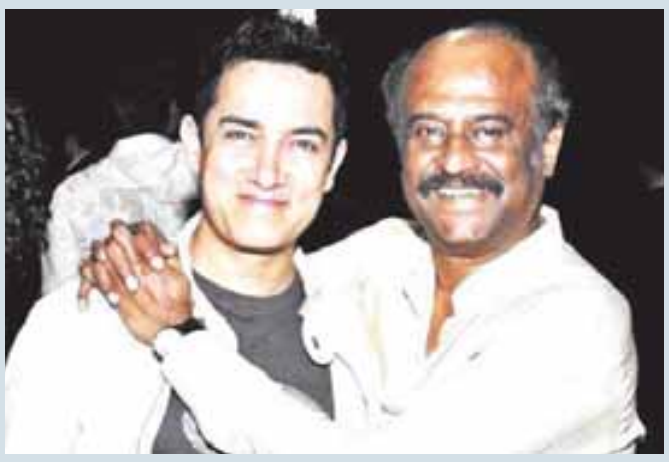

परदे पर दो साल बाद लौटने वाले हैं आमिर

'लाल सिंह चड्ढा' की रिलीज के दो साल के बाद आमिर खान एक बार फिर से पर्दे पर तहलका मचाने के लिए तैयार हैं। पर्दे पर इस बार वो साउथ सिनेमा से वापसी करेंगे। बॉलीवुड के 'थलाइवा' यानी रजनीकांत और उनकी लाडली श्रुति हासन के साथ वह साथ में नजर आने वाले हैं। इस फिल्म का नाम है 'कुली'। फिल्म की शूटिंग फाइनली शुरू हो गई है। फिल्म की शूटिंग के लिए श्रुति और आमिर इन दिनों पिंक सिटी जयपुर में हैं।

बॉलीवुड में 'कुली' नाम से तीन फिल्म बन चुकी है। साल 1983 में अमिताभ बच्चन पर्दे पर 'कुली' बने नजर आए और लोगों के दिल जीत गए। फिर डेविड धवन ने गोविंदा और वरूण धवन के साथ साल 1995 और 2020 में फिल्म कुली नंबर 1 बनाकर लोगों को खूब हंसाया। अब आमिर और रजनीकांत इस फिल्म के लिए तैयार हैं।

इस प्रोजेक्ट के माध्यम से श्रुति हासन और आमिर खान पहली बार पर्दे पर साथ काम करते नजर आएंगे। दोनों की ऑन-स्क्रीन केमिस्ट्री देखने के लिए फैंस के बीच काफी उत्साह है. मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार, श्रुति हासन ने गुरुवार को जयपुर में आमिर खान के साथ शूटिंग शुरू कर दी। फिल्म की शूटिंग विजाग और चेन्नई के साथ ही देश के अन्य हिस्सों में भी की गई है. 'कुली' के कुछ हिस्सों की शूटिंग कर चुकी श्रुति इस प्रोजेक्ट को लेकर बेहद खुश और एक्साइटेड हैं। आमिर इस फिल्म में कैमियो रोल में दिखेंगे, लेकिन कहा जा रहा है कि उनका स्क्रीन टाइम भले कम हो लेकिन ये किरदार काफी गहरा और यादगार होने वाला है।

परदे के ईसाइयों में अब बुराई नहीं दिखती

अशोक जोशी

जब कभी सिनेमा के ईसाई पात्रों की चर्चा होती है, तो दर्शकों के जहन में चिर परिचित किरदार दिखाई देने लगते हैं श्वेत श्याम फिल्मों की तरह कभी ये किरदार मक्खन की तरह सफेद झक होते हैं या डामर की तरह काले कलूटे।

बात इन किरदारों की शक्ल की नहीं है। हिंदी फिल्मों के तथाकथित ईसाई पात्रों की कहानी कुछ ऐसी ही होती थी। लेकिन, समय ने करवट ली है और हिंदी फिल्मों के ईसाई पात्रों की दशा और दिशा दोनों बदल गई।

हिंदी फिल्मों में सभी धर्मों तथा सभी जातियों के चरित्रों का समावेश किया जाता रहा है। फिर भी यहां कुछ चरित्रों को शुरू से ही स्टीरियोटाइप दिखाए जाने की परम्परा रही। ऐसे ही हैं फिल्मों के ईसाई किरदार जिन्हें पुरुष होने पर रॉबर्ट, पीटर, माइकल या जॉन के नाम से और महिला होने पर जूली, रूबी, मेरी या मोना डार्लिंग के नाम से बंधे बंधाए रूप में दिखाया जाता रहा है। यह किरदार या तो पादरी की तरह सफेद झक कपड़े पहनकर दुखी नायक या नायक की मदद करते या दारू के अड्डे पर दंगा करते दिखाई देते थे। लेकिन, अब फिल्मों से इन किरदारों की विदाई होने लगी। इसकी जगह अब नए ईसाई किरदार रूपहले पर्दे पर उभरते दिखाई देने लगे।

अब, दारू पी के दंगा करने के लिए कोई माइकल नहीं है या बेसहारा बच्चों को सहारा देने के लिए मिसेज डीसा नहीं है। अपनी लंबी गर्दन के साथ लिली को अब डोंट बी सिली नहीं कहा जाता। खलनायक की बगल में अब कोई मोना डार्लिंग नजर नहीं आती। उनकी जगह नए रील कैथोलिक उभरे हैं ,जो अब शराबी, वैम्प या सेक्रेटरी नहीं रहे। कुछ साल पहले रिलीज हुई 'कल हो न हो' में जया बच्चन की जेनिफर ईसाई महिला का नया रूप हैं। बदले हुए समाज में अब फ्रॉक पहनना या शराब पीना किसी के चरित्रहीन होने का परिचायक नही रह गया। पहले हमारी फिल्मों में इस तरह की रूढ़िवादिता का इस्तेमाल किया जाता था, लेकिन अब यह पूरी तरह से खत्म हो गई है।

सिने जगत में पहले उन पात्रों या घटनाओं का अंधा अनुसरण करने की आदत थी जो पहले किसी फिल्म में दर्शकों के दिलों में घर

बना चुकी होती है। यही कारण था कि जूली जैसे कथानकों में एक हिट फॉर्मूला बार-बार अपनाया जाता है जिसमें विवाह पूर्व यौन संबंध में शामिल एक ईसाई लड़की को चित्रित किया गया। इसी तरह फिल्म निर्माता हृषिकेश मुखर्जी की फिल्म 'अनाड़ी' की मिसेज डी जैसी सख्त बात करने वाली और सुनहरे दिल वाली मकान मालकिन कई फिल्मों में दोहराई गई। 'बॉबी' की मिसेज ब्रिगेंजा भी कुछ ऐसी ही थी।

हिंदी सिनेमा में सबसे पहले इसाई किरदारों को बदलने का बीड़ा 'अनाड़ी' में उठाया गया था। इस फिल्म में दयालु और बातूनी मकान मालकिन डीसा की भूमिका में ललिता पवार ने अपनी गर्मजोशी से दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया था। जबकि 'अमर अकबर एंथोनी' में एंथोनी गोंसाल्वेस को गोद लेने और पालन-पोषण करने वाले नजीर हुसैन का कैथोलिक पादरी का किरदार हमेशा दर्शकों को याद आता है। सिनेमा प्रेमियों के बीच 'आनंद' में हृषिकेश मुखर्जी ने ललिता पवार को एक कायापलट किरदार दिया, जिससे वे अपनी दुष्ट सास की छवि से मुक्त हो गईं। एक सख्त लेकिन स्नेही मैट्रन के रूप में किसी को भी उसके द्वारा 'आनंद' को डांटने पर कोई आपत्ति नहीं थी। उसके बाद एक ईसाई चरित्र मनमोहन देसाई की फिल्म अमर अकबर एंथोनी में पहली बार नायक के दर्जे तक पहुंचा। अमिताभ बच्चन ने

'माई नेम इज़ एंथोनी गोंजाल्विस' गाने में एंथोनी की भूमिका निभाई। एक सदाबहार हिट बन गया।

राज कपूर की फिल्म 'बॉबी' ने ईसाई लड़की को नायिका का दर्जा दिया। लेकिन, इस तथ्य को नजरअंदाज करना मुश्किल है कि एक किशोर 'बॉबी' ने 25 साल से भी पहले बिकनी पहनी थी। कोई 'मेरा नाम जोकर' की शिक्षिका मेरी को भी नहीं भूल सकता जो मेरा नाम जोकर में एक किशोर की यौन जागृति के लिए जिम्मेदार है। क्या यह संयोग है कि वह भी मिस मैरी है! कई सालों बाद रमेश सिप्पी ने डिंपल को फिल्म 'सागर' में मारिया का किरदार निभाने के लिए बुलाया और एक लगभग नग्न शॉट देकर पर्दे पर सनसनी फैला दी थी।

नीरज वोरा ने अपनी फिल्म 'जोश' में गांव वासियों के लिए एक अलग रास्ता चुना। 'जोश' की शूटिंग के दौरान पूरी फिल्म यूनिट गोवा में रुकी थी और फिल्म के पात्र भी गोवा की पृष्ठभूमि से ही मेल खाते थे। इसके बाद ऐसी छिटपुट फिल्में आई, जिन्होंने समुदाय के साथ न्याय करने की कोशिश की। एक उल्लेखनीय अपवाद फिल्म निर्माता बासु चटर्जी की 'बातों बातों में' थी। भारतीय ईसाइयों को चित्रित करने में रूढ़िवादिता का सहारा न लेने के लिए इसे आलोचकों की प्रशंसा और प्रशंसा मिली।

90 के दशक के बाद की सबसे उल्लेखनीय फ़िल्में कुंदन शाह की कभी हाँ कभी ना, संजय लीला भंसाली की खामोशी - द म्यूज़िकल और 'ब्लैक' रही है। उसके बाद कुछ ऐसी फ़िल्में आई जिन्होंने ईसाई समुदाय को या तो विकृत करना या रूढ़िबद्ध करना शुरू कर दिया। विनोद पांडे की 'सिंस' जिसे ईसाई समुदाय की पृष्ठभूमि पर फिल्माया गया था और सेक्स के प्रति एक पादरी के जुनून पर केंद्रित था। इम्तियाज अली की फिल्म 'सोचा न था' ने ईसाई परिवार की रूढ़िवादिता और शराब पीने में उनकी कथित व्यस्तता पर प्रहार किया।

इस विचारधारा को बदला करण जौहर की फिल्म 'कल हो न हो' ने। जिसकी नायिका नैना कैथरीन कपूर ने सामाजिक जुड़ाव का बेहतरीन उदाहरण पेश किया। इसके अलावा उसने दर्जनों बॉयफ्रेंड इकट्ठा करने में कोई रुचि नहीं दिखाई और खुद को बहुत गरिमा के साथ पेश किया। यह सब देखकर यही लगता है कि हिंदी सिनेमा अब लडकपन से ऊपर उठकर परिपक्वता की तरफ बढ़ रहा है और उसने अपने किरदारों को परंपरागत तरीकों से आगे सोचना और पर्दे पर उतारना शुरू भी कर दिया है। यही कारण है कि अब सिनेमा के ईसाई किरदार काल्पनिक नहीं, बुराई से नाता तोड़कर वास्तविक और स्वीकार्य रूप में नजर आने लगे हैं!

लड़के हो तो... बेटे मत बनो!

प्रकाश पुरोहित

मेरे साथ सबसे बड़ी दिक्कत यह है कि मैं किसी का बेटा नहीं, मामूली स्कूल मास्टर का बेहद आम लड़का हूं। मेरे बाप ने मास्टर होने के अलावा कुछ और चुना होता तो आज मुझे यूं चुप नहीं रहना पड़ता। ये बाप लोग कभी सोचते भी हैं कि उनके धंधे की वजह से उनकी औलादों को कितना भुगतना होता है। मेरे जैसे तो कहीं मुंह ही नहीं खोल सकते।

पिछले हफ्ते संसद में सभापति नाराज हुए तो बोले- 'किसान का बेटा हूं, किसी के आगे झुकूंगा नहीं। कमजोरी नहीं दिखाऊंगा।' बताइए, ये भी अगर मेरी तरह मास्टर या किसी कारकून के लड़के होते तो इस तरह खुलेआम यह बात कह सकते थे! चलिए, मान लेते हैं, कह भी दिया तो क्या बात का उतना असर होता! किसान तो छोड़िए, चायवाले के बेटे भी कहने लगे हैं- 'बचपन में चाय बेची है, ज्यादा उलझना मत, वरना देश ही बेच दूंगा।' बाप का धंधा ही तय करता है कि पैदा होने वाला लड़का है या बेटा। मेरे साथ तो शुरू से मास्टर का लड़का नत्थी हो गया था। यही वजह है कि ऐसे किसी बदतमीजी के मौके पर मुझे चुप रह जाना पड़ता है कि मुदर्रिस की औलाद क्या खा कर बोलेगी।

मास्टर से अच्छे तो गुंडे के बेटे होते हैं कि एक तो उन्हें पहले से बनी बनाई छवि मिलती है कि उसके मुंह मत लग, गुंडे का बेटा है। जब पानी सिर से ऊपर होने लगता है तो उसे यह कहने का संवैधानिक अधिकार होता है कि गुंडे का बेटा हूं, हाथ-पैर तोड़ कर भीख मंगवा लूंगा। गुंडे के बेटे को वैसे भी बोलने के मौके कम मिलते हैं कि खुद पुलिस ही फरियादी को समझा देती है कि गुंडे का बेटा है, हम भी कुछ नहीं कर पाएंगे। मामला यहीं रफा-दफा कर देते हैं, कुछ ले-दे कर।

राजनीति में परिवारवाद का विरोध करने वाले मास्टरों की तरफ ध्यान नहीं देते हैं। औलाद की इच्छा भले ही ना हो, मास्टर बाप तो यही चाहता है कि उसका लड़का भी मास्टर तो बन ही जाए। इज्जत नहीं तो क्या, कमा-खा तो लेगा, लाइफ सेट हो जाएगी, लेकिन यह नहीं सोचता कि ऐसे मौके पर उसे जिंदगी में कितनी बार मुंह बंद रखना पड़ेगा। कौन उसकी धमकी से डरेगा कि मास्टर का बेटा हूं...! पहली आपत्ति तो इसी बात पर होगी कि इसे किसने बेटा होने का अधिकार दे दिया। लड़का है तो लड़का ही रहे। बाप ने करम तो लड़के वाले किए और लड़का चला है बेटा बनने।

मंत्री या विधायक या उनके चमचों को तो हक रहता है कि पिताजी का जिक्र करें और खुद को बेटा बताएं। चौराहे पर चालान बनाने में मुस्तैद पुलिस भी जवाब में यह नहीं कह सकती कि पुलिसवाले का बेटा हूं, जबकि बगैर कुछ किए-धरे इन नेता-पुत्रों को बेटा होने का पैदाइशी हक मिल जाता है। बेटा तो छोड़िए, दूर-दूर के रिश्तेदार भी छप्पन इंच की छाती चौड़ी कर यह कहने से बाज नहीं आते कि चाचा का भतीजा हूं, भांजा हूं, वर्दी उतरवा लूंगा, बस्तर फिंकवा दूंगा। अपने पिता के काम का सहारा लेकर समाज को धौंसने वाले इतने हैं कि हर बार मुझे ही सुनना पड़ता है और बदले में कुछ नहीं कह पाता हूं।

चलिए कहना भी चाहूं तो क्या यही नहीं कहूंगा कि मास्टर का बेटा हूं, आगे क्या! झुकना तो पड़ता ही है हर कमजोर मौके पर। फिर मंत्री के साले के नंबर बढ़ाने हों या गुंडे के बेटा-बेटी को ट्यूशन पढ़ाना हो या चुनाव की घोषित धांधली में या तो शामिल होना हो या रेत में मुंह छिपा लेना हो कि जैसे कुछ नहीं देखा हो। मास्टर का काम सिर्फ स्कूल में पढ़ाना तो कभी का खत्म कर दिया गया है। मास्टर आंदोलन भी नहीं करते और सड़कों पर नहीं उतरते, इज्जत का मामला है, इसलिए किसान का बेटा इतरा सकता है कि जब चाहे दिल्ली के रास्ते बंद कर देता है। मास्टर तो अपने स्कूल का दरवाजा भी बंद नहीं कर सकता।

अब मेरे साथ यही रस्साकशी चल रही है कि बाबूजी (यह सम्मान सिर्फ गृह-विभाग तक ही सीमित है) यानी मेरा बाप चाहता है कि उनकी तरह मास्टर बनूं और मैं नहीं चाहता कि जिस तरह आज मैं अपने पिता के व्यवसाय को कोस रहा हूं, मेरी औलादें भी मेरे नाम पर रोती रहें। यहां मैं स्वार्थी हूं कि अगर आज मैंने धंधा बदल लिया तो लड़का भी बेटा हो जाएगा और मुझे भी बाप के बजाय पिता का संबोधन सुनने को मिलेगा। आप ही बताइए, क्या मेरी सोच गलत है!

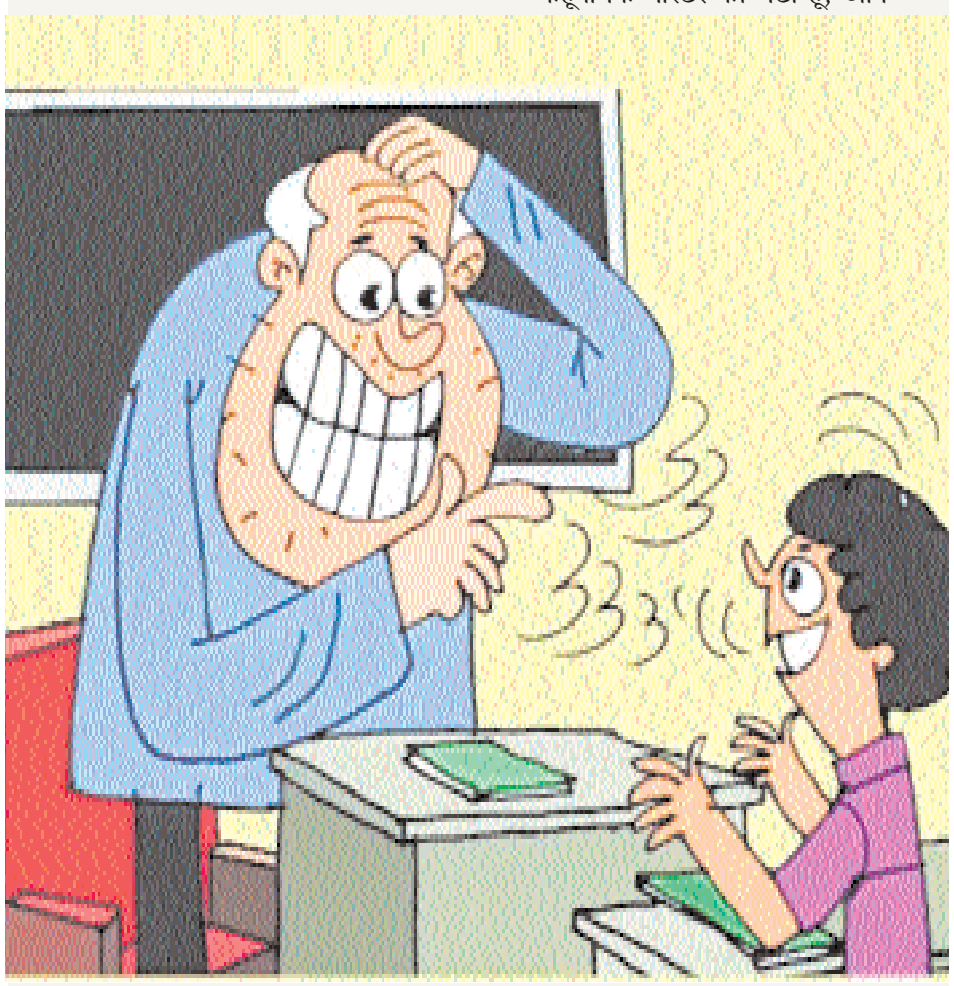

क्या कह रही है जिंदगी

ममता तिवारी

लेखक साहित्यकार हैं।

पुरखों का दिन : हमें टोको लेकिन ऐसे रोको मत

अमेरिका में हर साल 22 दिसंबर को पूर्वज दिवस यानी फोरफादर्स डे मनाया जाता है। यह दिन उस यात्रा की याद में मनाया जाता है जो सन् 1620 में कुछ यात्रियों ने इंग्लैंड से शुरू की थी। अंटलांटिक सागर में फ्लावर जहाज में वे प्लाईमाउथ, इंग्लैंड से समुद्री यात्रा कर रहे थे। वे नार्थ अमेरिका पहुंचे। 149 साल बाद 1769 में अपने पुरखों की याद में एकत्र होकर भोज बनाया। फिर तरह तरह के व्यंजन, और क्लब बने। इस तरह पूर्वजों का दिन एक स्मरणोत्सव बन गया। उस समय का स्मरण जब तीर्थयात्री पूर्वजों ने 1620 में प्लायमाउथ रॉक पर कदम रखा था। यह अतीत और वर्तमान के बीच के पुल का प्रमाण है। 102 यात्री मेफ्लावर जहाज पर सवार होकर 66 दिनों की खतरनाक यात्रा पर निकले और 21 दिसंबर 1620 को उन्होंने यूरोपीय बस्ती को चिन्हित किया जो बाद में संयुक्त राज्य अमेरिका बनता है।

फोरफादर्स डे कैलेंडर में कहीं अंकित नहीं किया गया। सबसे पहले मैसाचुसेट्स में ओल्ड कॉलोनी क्लब की परंपरा शुरू हुई। यह एक जीवंत उत्सव है जिसमें परेड होती है, प्रार्थना उत्सव है। सुकोटैश नामक एक व्यंजन है जो स्वीटकार्न्स और बीन्स से बना होता है।

इन उम्रदराज लोगों की दास्तां उन जवान लोगों को बतानी है जो उन्हें समझ नहीं पा रहे। उन्हें ये ग़लतफ़हमी क्यों है कि वो कभी उम्रदराज़ नहीं होंगे।

बूढ़ी होती जवानी
धीमे धीमे दाँत की तरह
सपने भी टूट जायेंगे
लाख माँग बदल कर संवारेंगे
पर बाल कम से कम होते जाएंगे
चश्मे के पुराने नम्बर पर अड़े रहने की ज़िद में
सारे अक्स धुंधले होते जायेंगे
बच्चों के साथ कदम मिलाने की कोशिश में
मन के हौसले भी लड़खड़ायेंगे
नौजवानों को मधुर लगता ऊंचा संगीत
हमारे लिये शोर बन जायेगा
हाँफते थकते शरीर का बोझ

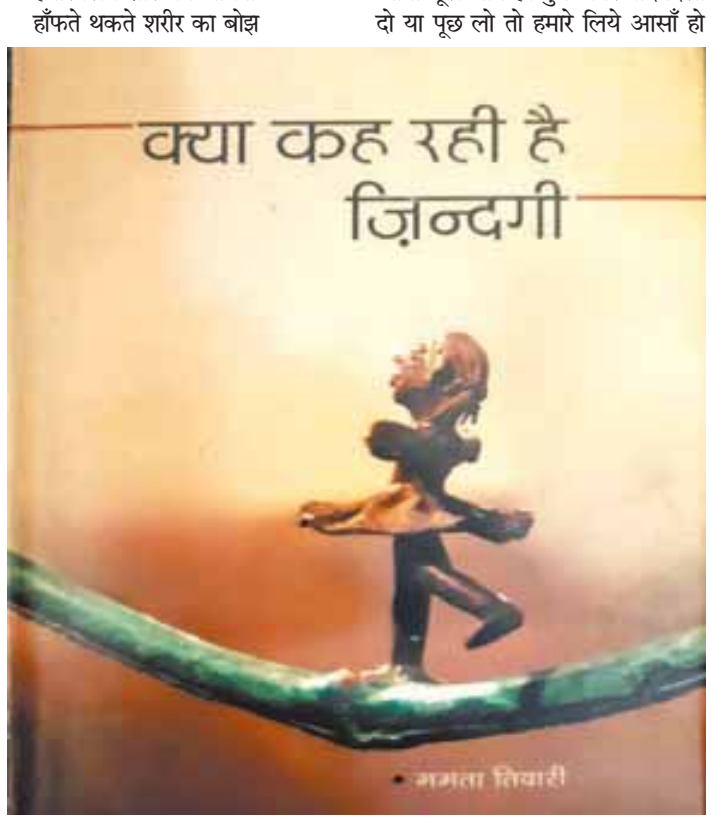

कमर उठाने से इंकार कर देगी
मज़ाक से मत सुन, ऐ दोस्त!
ये बुढ़ापा तुझ पे एक दिन कहर ढायेगा।

दरअसल, मैं कहना चाहती हूं कि हमारी भूलों पे हमें झिड़के नहीं। मसलन चश्मा फ्रिज में रख दिया, सिर पर टोपी लगी है पर घर भर में टोपी ढूंढ रहे हैं, मैं तो किचन में जाती हूँ तो कोई ना कोई डब्बा हाथ से छूट जाता है। कभी दाल फैल जाती है। तुम हमें बच्चे थमाते हो हम डरे डरे रहते हैं कहीं कुछ खा ना ले, कहीं गिर ना जाये। हम से अब गोद में उठाया नहीं जाता, पर कहीं तुम बुरा ना मान जाओ।

हां, तुम हमें डांटो, जब हम दवाई खाना भूल जाते हैं। तुम अगर याद दिला दो या पूछ लो तो हमारे लिये आसाँ हो जाता है। कई बार हम दो बार दवाई खा लेते हैं। कई बार हम गलत सलत छुप के खा लेते हैं जो हमें नहीं खाना चाहिये तो हमें ज़रूर डांटो। बिना पूछे, बताये घूमने निकल जाते हैं तो भी डांटो, हम घर का रास्ता भूल सकते हैं। घूमने के समय हम चाहें लाख मना करें, पर हमें हियरिंग एड ज़रूर लगाये। चाहे हम लाख कहें कि अरे हमें तो सब ठीक सुनाई देता है।

देखो भई, ये सब बाद में तुम पे भी गुज़र सकता है। सो हमें प्रेम से समझा दो क्योंकि तुम हमारे काम करने से चिढ़ जाते हो कुछ ना कुछ गड़बड़ होती है पर इसके लिये हमें बैठने की सजा मत दो। हाथ पैर चलने से आत्मविश्वास बना रहता है। इसमें दूसरों के सामने ये सोचकर शर्मिंदा मत होना कि लोग क्या कहेंगे कि बूढ़े माँ-बाप से काम करवा रहें हैं और हम उम्रदराज़ लोगों को भी ''ना'' कहना सीखना होगा कि हमसे नहीं हो पा रहा। सामर्थ्य से ज्यादा करने की कोशिश ना करें।

ये तो घर की बात हुई, पर हम उम्रदराज़ लोगों को भी यार दोस्तों, गप्पों, गीतों, किताबों, मंदिर, भजन, थियेटर, किटी की ज़रूरत है। इस अमेरिकी दिवस की तरह हमारे यहां पितृमोक्ष अमावस्या है जिसमें हम सिर्फ भोजन पर केंद्रित हैं। मुझे लगता है हमें भी इस दिशा में काम करने चाहिये उनके लिये लायब्रेरी, क्लब हाउस, वृक्षारोपण, कुछ पढ़ के सुनाना, गीत गाना, भजन संध्या रखना, आपस के दुःख सुख बाँटना तमाम चीजें हैं जो घर, कॉलोनी, समाज, शहर, राज्य, देश में तैयार करें सिर्फ वृद्धाश्रम बनाने और एक दिन भोजन खिलाने का इरादा छोड़ दें आजकल पाप बढ़ रहा है तो आश्रमों में दान बहुत हो रहे हैं कि माँ बाप की सेवा नहीं कर पाये।

सोचिये वो भी व्यस्त रहेंगे तो कम बीमार पड़ेंगे कम अवसाद के शिकार होंगे तो आप को भी निश्चिंतता रहेगी। तो आज ही नौजवान मिल कर छोटे छोटे क्लब बनायें, शहर में और बारी बारी से अपनी ड्यूटी बांध लें आज का कार्यक्रम कौन संचालित करेगा फिर धीरे धीरे बागडोर उन्हें भी दें उनसे सलाह भी लें उन्हें क्या मनोसलाहकार की ज़रूरत है या कोई किताब सुनने की या कोई गीत गाने की। पहले महीने में एक बार फिर साप्ताहिक करें, अपने भविष्य का ख्याल करें ये काम ज़रूर करें और रोज़ सुबह अपने बुजुर्गों से हंस कर पूछें और क्या कह रही है जिंदगी ?

नजरिया

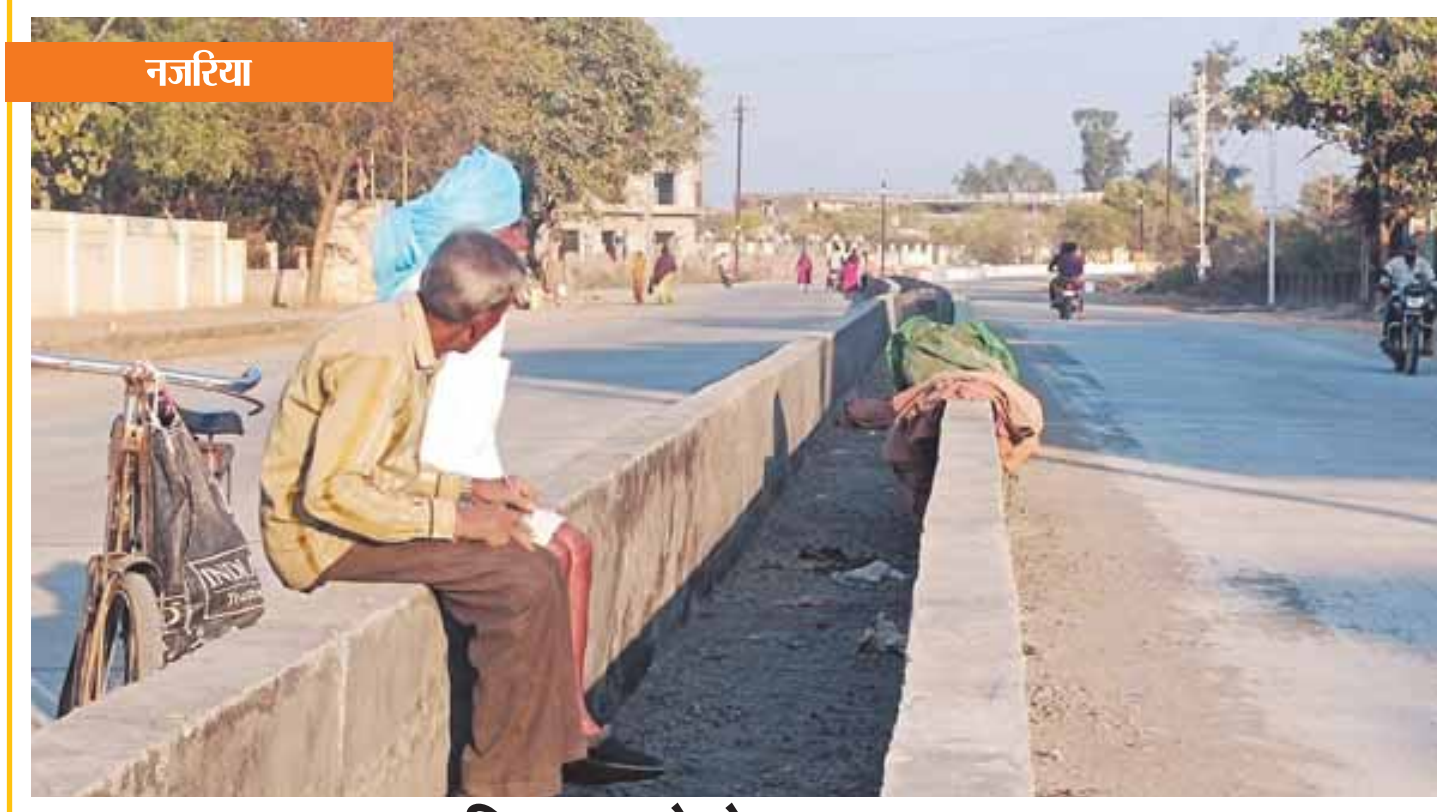

डिवाइडर को तोड़ता मानव मन

जैसा कि हर शहर में हो रहा है, हमारे यहां भी मुख्य सड़क को फोर लेन बनाया गया है। दोनों ओर की टू लेन के बीच डिवाइडर बनाया गया है। डिवाइडर मतलब विभाजक। मैंने देखा कि हरे साफे वाले महाशय उधर साइकल लिये आ रहे थे। पेंट बुशर्ट पहने महाशय जी इधर से। दोनों डिवाइडर लांघ कर उसकी पाल पर बैठ कर बतियाने लगे।

मनुष्य ने कभी भी डिवाइडर का पालन नहीं किया। जर्मनी में बर्लिन की दीवार पिछली सदी में बनी और टूट गई। दुनिया में अनेक देशों के बीच डिवाइडर बने हैं और टूटे हैं क्योंकि मनुष्य मन का स्वभाव प्रेम है जो डिवाइडर की परवाह नहीं करता। बहुत से डिवाइडर मूर्त रुप से दिखते हैं। प्रेम उन वर्जनाओं को तोड़ता है, मिलाता है। समाज में कुछ अदृश्य डिवाइडर भी बने हुए हैं जैसे, काले गोरे, ऊंच-नीच, जाति धर्म, मजहब, अमीरी, गरीबी। राजनीति ने अंधधार्मिकता के जरिए उन्हें बनाया और फैलाया है। डिवाइडर बनाकर सफलतापूर्वक अपनी राजनीतिक यात्रा निर्बाध गति से की जा रही है, जिसे हम समझ नहीं पा रहे हैं। यहां यह उदाहरण यातायात नियमों के उल्लघन करने के तात्पर्य से नहीं लिखा गया है बल्कि मानव-मन का उदाहरण दिया गया है। जैसे ही हम मिल बैठ कर समझेंगे मनुष्य से मनुष्य पृथक करने वाले डिवाइडर नहीं होंगे फिर चाहे बात परिवार की हो या समाज की।

फोटो एवं विवरण : बंसीलाल परमार

जुगलबंदी

समीर लाल 'समीर'

लेखक कनाडा निवासी प्रख्यात ब्लॉगर और व्यंग्यकार हैं।

जब बात दिल से लगा ली तब ही बन पाए गुरु

तिवारी जी आज त्रिपाठी जी का किस्सा सुना रहे थे।

ये त्रिपाठी हमारे साथ अपनी जवानी के दिनों में यहीं पान के ठेले पर दिन-दिन भर बैठा रहता था। न कोई काम न कोई काज बस सुबह से चला आता और रात को जब तक हम न लौट जाएं वो टस से मस न होता। कई बार उसे समझाया कि कोई काम धंधा खोल ले। हमारा तो चलो फिर भी किराया आता है उससे काम चल जाता है मगर तुम कब तक आश्रित बने रहोगे दूसरों पर?

त्रिपाठी ने बात दिल से लगा ली और उसने तालाब के पास सरकारी जमीन पर एक चाय का ठेला लगा लिया। लोग तालाब की तरफ स्नान करने जाते या जानवर नहलाने, वो ही त्रिपाठी से कभी कभार चाय खरीद लेते और कुछ पैसा आ जाता। एक बार दो पुलिस वाले भी तालाब में स्नान करने आए तो वो भी चाय पीने बैठ गए। चलते समय जब त्रिपाठी ने पैसे मांगे तो पैसे के बदले दो डंडे और उस पर से धमकी अलग कि आगे से कभी पैसे मांगे तो ठेला फिंकवा देंगे। खैर, समय के साथ साथ वो चाय के साथ एक डिब्बे में लड्डू भी रखने लगा। वो भी कुछ कुछ बिकने लगे।

पैसे का स्वभाव है कि जब आने लगता है तो और आने की लालच भी साथ ले आता है। त्रिपाठी भी रास्ता खोज रहे थे कि कैसे और पैसा आए? एक दिन उसी डिब्बे में से दो लड्डू लेकर शहर के जागृत बजरंग बली के मंदिर पर जाकर उसे चढ़ा आए कि हे हनुमत, आशीर्वाद दो ताकि और पैसा आए। दर्शन लेकर बाहर निकल ही रहे थे कि प्रसाद वाले की दुकान पर नजर पड़ी। लोग लाइन लगाकर प्रसाद में चढ़ाने के लिए लड्डू खरीद रहे थे। बस! त्रिपाठी को लगा कि बजरंग बली ने उसकी सुन ली।

तिवारी जी बताने लगे कि त्रिपाठी बचपन से ही पहेली बाज था और हमेशा पूछता कि बताओ पहले अण्डा आया या मुर्गी। जवाब तो खैर क्या ही मिलता मगर आज वो पहेली उनको रास्ता दिखा गई।

पहले मंदिर आया या प्रसाद की दुकान? बस! फिर क्या था आते वक्त कुछ जरूरी खरीददारी करते हुए अपने ठेले पर लौट आए। ठेला भी अब ठेला नहीं गुमटीनुमा दुकान हो गई थी, ऊपर मोमिया की छत भी चार बांस के सहारे तनी थी। वो उस रात तालाब के किनारे ही रुक गए। आधी रात गए वहीं जमीन से ऊगी एक छोटी सी चट्टान को नहलाया धुलाया और खूब सिंदूर पोत कर फूल माला पहनाई और सुबह-सुबह अगरबत्ती जला कर भागते हुए चौराहे पर आया और सब को बताया कि हनुमान जी प्रकट हुए हैं।

तिवारी जी बताने लगे कि आज भले ही त्रिपाठी न हमको याद करे मगर तब हमने जानते समझते हुए भी उसकी बहुत मदद की थी हनुमान जी के प्रकट होने की बात को फैलाने में। लोग भाग-भाग कर दर्शन को जाने लगे। त्रिपाठी जी ने पहले से ही अपनी दुकान से दो लड्डू हनुमान जी पर चढ़ा रखे थे। उसका देखा देखी बाकी के दर्शनार्थी भी उनकी गुमटी से लड्डू खरीद कर चढ़ाने लगे।

देखते देखते चाय की गुमटी प्रसाद और पूजन सामग्री की दुकान हो गई। पैसा और आने लगा तो पैसे की चाह और बढ़ी और त्रिपाठी जी ने 'मंदिर यहीं बनाएंगे' का बोर्ड लगा कर -मंदिर निर्माण हेतु दान पेटिका भी लगा दी।

दान आता रहा, एक कच्चे मंदिर का निर्माण भी हो गया। कुछ ही समय में दुकान पर एक रिश्तेदार को बैठा कर खुद मंदिर में पूजा पाठ कराने लगे। सरपंच का चुनाव था जिसमें यादव जी चुनाव लड़ रहे थे। उन के लिए जीत का हवन भी करा दिया त्रिपाठी जी ने और जिसकी किसी को उम्मीद नहीं थी वो यादव जी इस हवन के प्रताप से चुनाव जीत गये। हालांकि अंदर की बात यह थी कि गाँव वालों को यह कह कर भी डराया गया था कि किसी और को वोट डालोगे तो हनुमान जी का कहर तुम पर बरपेगा।

सरपंच के चुनाव जीतने की चर्चा जंगल में आग की तरह फैली। फिर तो विधायक क्या और मंत्री क्या- सभी हवन पूजन कराने आने लगे। आस पास की कई एकड़ की सरकारी जमीन को घेर कर आश्रम भी बना लिया गया। तालाब भी आश्रम का हिस्सा बना जिसे अब सिर्फ भक्त ही इस्तेमाल कर सकते थे पूजा अर्चना के लिए। त्रिपाठी जी अब मुख्य महंत थे आश्रम के।

गाड़ी घोड़ा और सारे तामझाम के साथ सरकार की तरफ से सिक्युरिटी भी तैनात करा दी गई थी, उसमे उन दोनों सिपाहियों की भी ड्यूटी लगी थी जिन्होंने कभी त्रिपाठी जी को दो डंडे लगाए थे और आज वो ही त्रिपाठी जी को सुबह शाम सलाम ठोक रहे हैं।

हालांकि नई भव्य मूर्ति के साथ मंदिर तो क्या पूरा आलीशान आश्रम तैयार हो गया है मगर उसी से थोड़ा हट कर प्रांगण में ही वो मंदिर यहीं बनाएंगे का बोर्ड आज भी लगा है और मंदिर निर्माण हेतु दान पेटिका पर तीर का निशान बना दिया गया है जिस पर लिखा है कि 'कृपया मंदिर निर्माण हेतु दान मंदिर के भीतर दान पेटिका में करें।' बजरंगबली की कृपा से दान का प्रवाह अनवरत जारी है।

आज त्रिपाठी जी को विश्व गुरु का दर्जा प्राप्त है।

चाय बेचने से सफर शुरू करके विश्व गुरु का दर्जा प्राप्त कर लेना भी सबके बस की बात नहीं होती है। बिरले ही ऐसे होते हैं।